तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 9, अंक- 9, अगस्त 2021, मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

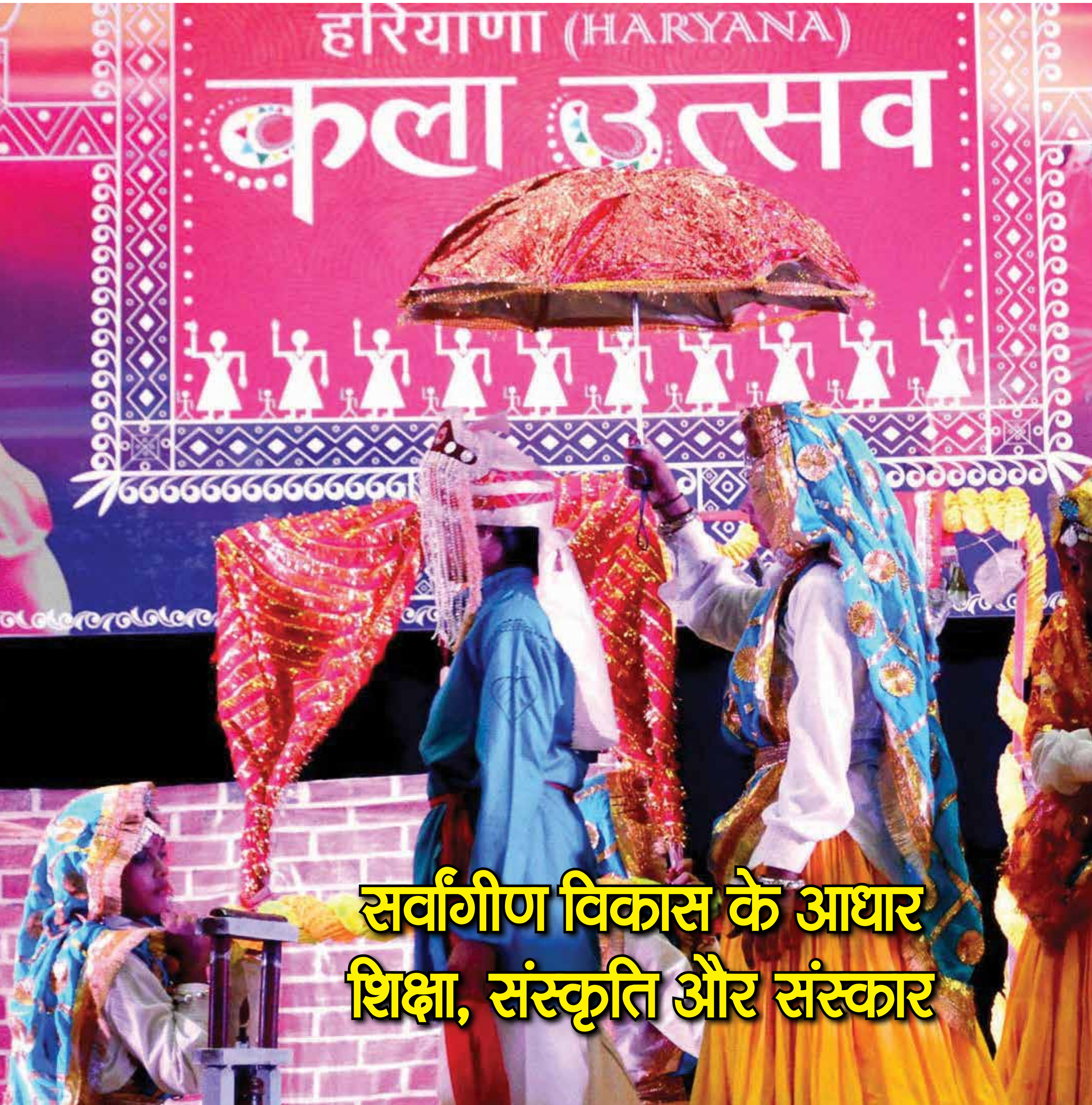

सर्वांगीण विकास के आधार
शिक्षा, संस्कृति और संस्कार

पन्द्रह अगस्त

अगणित वीर शहीदों ने जब अपना रक्त बहाया था।
भारत माँ की बलिवेदी पर अपना शीश चढ़ाया था।
राष्ट्र प्रेम की ज्वाला में जब देश समूचा उबला था।
वन्दे मातरम् का सुर ही जब सबके मुख से निकला था।
भारत का जब बच्चा-बच्चा भारत की जय बोला था।
तब ही अंग्रेज़ों का सिंहासन इस धरती से डोला था।
उन पुरखों की कुरबानी को क्यों हम आज हैं भुला रहे?
लगता अफीम की गोली खाकर इक दूजे को सुला रहे।
क्या आज़ादी पाने भर से ही सपना साकार हो गया?
बनी ज़िन्दगी अपनी ऐसी कि जीना दुश्वार हो गया।
ग़र सँभले ना आज दोस्तो! देश गर्त में जाएगा।
अपना वंशज फिर हमको ही क्या कभी क्षमा कर पाएगा?
पन्द्रह अगस्त है आज सोचिए, हमको क्या अब करना है?
स्वातन्त्र्य पर्व का हर्ष मनाकर नित्य ही आगे बढ़ना है।
विकसित देशों की पंक्ति में भारत को शीर्ष कहाना है।
गर्व सहित पूरी धरती पर राष्ट्र ध्वज फहराना है।

- डॉ. योगेश वासिष्ठ
अध्यापक शिक्षा विभाग
रा.शै.अनु.एवं प्रशि.परिषद
हरियाणा, गुरुग्राम

शिक्षा सारथी

तमसो मा ज्योतिर्गमय

अगस्त 2021

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
डॉ. महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ. जे. गणेशन
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

अंशज सिंह
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

सम्वर्तक सिंह
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन-1)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Dilbag Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,
New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"जैसे पक्षी दोनों पंखों के बल पर आकाश में उड़ता है, वैसे ही ज्ञान और कर्म इन दोनों के बल पर श्रेय प्राप्त होता है।"

» हरियाणा में सांस्कृतिक गतिविधियों की धूम 5
» किशोर-मन को पंख लगाते सांस्कृतिक उत्सव 7
» विद्यार्थियों में उत्साह भरते कला उत्सव 10
» लोक कला और संस्कृति का समागम: कल्चरल फेस्ट 12
» शिक्षकों की रचनात्मकता में नए रंग भर गया रंगोत्सव 15
» प्रतिभा को निखारने का सशक्त माध्यम हैं सांस्कृतिक गतिविधियाँ 16
» कला भाव-संप्रेषण का सशक्त माध्यम: विजय कुमार यादव 18
» नये प्रतिमान गढ़ता करनाल का राजकीय उच्च विद्यालय नगला मेघा 20
» स्काउट्स एंड गाइड्स के पर्याय हैं अमित कुमार 23
» गज़ब के चित्र बनाती है सुशीला 24
» अब छज्जों, छतों पर हरीतिमा बिखेरेंगे जंगल 25
» खेल-खेल में विज्ञान 28
» कैसे बनें आदर्श विद्यार्थी? 30
» ज़िंदगी के नम्बर 31
» A Step Towards Sustainability 32
» Make Online Education a Happy and Healthy.. 34
» Educational Leadership Skills Pave for Institutional.. 37
» Improving English Vocabulary among Primary .. 40
» Bio-photovoltaic Cells: A Green Energy Approach 45
» Adolescence and Parenting 47
» Amazing Facts 48
» General Quiz 49
» आपके पत्र 50

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है।
यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

कला और संस्कृति के माध्यम से सर्वांगीण विकास

शिक्षा का उद्देश्य एक बालक का सर्वांगीण विकास करना है। सर्वांगीण विकास का अर्थ है बौद्धिक विकास के साथ-साथ शारीरिक, नैतिक और सामाजिक विकास, ताकि बड़ा होने पर वह इस समाज का एक संवेदनशील व जागरूक व्यक्ति बन सके। विद्यालयों में आयोजित अनेक सह-शैक्षिक गतिविधियों के आयोजन का उद्देश्य भी यही है। कला व सांस्कृतिक गतिविधियाँ उन्हें अपनी प्रतिभा व कौशल दिखाने का अवसर प्रदान करती हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 में कहा गया है कि भारत की समृद्ध सांस्कृतिक संपदा का संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार, देश की उच्चतम प्राथमिकता होनी चाहिए, क्योंकि यह देश की पहचान के साथ-साथ अर्थव्यवस्था के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। संस्कृति का प्रसार करने का सबसे प्रमुख माध्यम कला है। कला-सांस्कृतिक पहचान, जागरूकता को समृद्ध करने और समुदायों को उन्नत करने के अतिरिक्त, व्यक्तियों में संज्ञानात्मक और सृजनात्मक क्षमताओं का संवर्धन तथा व्यक्तिगत प्रसन्नता को बढ़ाने के लिए जानी जाती है। व्यक्तियों की प्रसन्नता/कल्याण, संज्ञानात्मक विकास और सांस्कृतिक पहचान वह महत्त्वपूर्ण कारण हैं जिसके लिए सभी प्रकार की भारतीय कलाएँ, प्रारंभिक बाल्यावस्था, देखभाल व शिक्षा से आरम्भ करते हुए शिक्षा के सभी स्तरों पर छात्रों को प्रदान की जानी चाहिए।

हर्ष का विषय है कि प्रदेश में पहले से ही इस दिशा में काफी कार्य हो रहा है। विद्यालय स्तर पर कला और संस्कृति क्लब बनाए गए हैं। कला गतिविधियों के लिए विद्यालयों को अनुदान दिया जा रहा है। इन सबका परिणाम है कि प्रदेश के विद्यार्थी राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में कमाल का प्रदर्शन कर रहे हैं।

प्रस्तुत अंक इन्हीं गतिविधियों पर केंद्रित है। आपकी प्रतिक्रियाओं व अमूल्य सुझावों की हमेशा की भाँति प्रतीक्षा रहेगी।

- संपादक

हरियाणा में सांस्कृतिक गतिविधियों की धूम

डॉ. प्रदीप राठौर

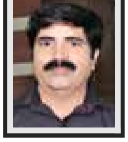

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य एक बच्चे का सर्वांगीण विकास करना है। सांस्कृतिक गतिविधियों से छात्रों की प्रतिभा को निखारने में मदद मिलती है और उन्हें अपने विशेष कौशल विकसित करने का अवसर मिलता है। सांस्कृतिक गतिविधियों पर आधारित प्रतियोगिताएँ एक प्रतिस्पर्धी माहौल बना सकती हैं और उन्हें एक बेहतर नागरिक बनाने के उद्देश्य की दिशा में काम करने में मदद कर सकती हैं। स्कूली पाठ्यक्रम के माध्यम से सांस्कृतिक मूल्यों को विकसित करने पर वर्तमान शिक्षा प्रणाली में बहुत बल दिया जा रहा है। इसके लिए प्रदेश के विद्यालयों में स्कूलों में नियमित सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। समग्र संज्ञानात्मक विकास के लिए छात्रों की अंतर्निहित प्रतिभा को बढ़ाने के लिए सांस्कृतिक उत्सव के तहत विभाग द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। छात्रों को संगीत, नृत्य, नाटक और दृश्य कला जैसे अन्य क्षेत्रों में अपना करियर बनाने के लिए प्रेरित किया जाता है। विद्यार्थियों को स्कूली स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर की सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में भाग लेने का अवसर प्रदान किया जाता है। विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा हरियाणा की विरासत, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों पर आधारित विशिष्ट थीम विषयों पर निम्न प्रकार की प्रतियोगिताएँ स्कूल स्तर से लेकर राज्य स्तर तक आयोजित की जाती हैं-

1. लोक नृत्य- एकल और सामूहिक नृत्य
2. संगीत- सोलो (रागनी) और समूह गीत
3. साँझी प्रतियोगिताएँ
4. स्किट/लघु नाटक

दोनों श्रेणियों अर्थात कक्षा 5वीं से 8वीं और 9वीं से 12वीं के लिए सांस्कृतिक उत्सव की संगठनात्मक संरचना निम्नानुसार है-

सांस्कृतिक प्रतियोगिता में प्रत्येक खंड और जिले के सभी विद्यालयों को कवर किया जाता है। गौरतलब है कि पहला 'कल्चरल फेस्ट' 2017 में आयोजित किया गया था। तत्पश्चात् इसका आयोजन प्रत्येक वर्ष किया जाता है। राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के विजेता राष्ट्रीय स्तर पर हरियाणा का प्रतिनिधित्व करते हैं। राष्ट्रीय स्तर की उपलब्धियों का वर्षवार विवरण इस प्रकार है-

समर कैंपों का आयोजन :

सांस्कृतिक उत्सव विद्यार्थियों को सीधे तौर पर उस कला व संस्कृति से जोड़ने का काम कर रहे हैं, जिस संस्कृति को अपनाकर हम पले व बड़े हुए हैं। सांस्कृतिक उत्सव विद्यार्थियों में छिपी प्रतिभाओं को तराशकर, निखारकर उन्हें बहुमुखी प्रतिभाशाली बना रहे हैं। नाटक, नृत्य, गायन, लोक कला क्षेत्रों में अपना भविष्य भी तलाश कर सकते हैं। ये उत्सव विद्यार्थियों को जहाँ अनुभवी, सक्षम, कला व प्रकृति-प्रेमी बनाते हैं वहीं रोजगार भी दे सकते हैं। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए किताबी ज्ञान के साथ-साथ ये उत्सव जरूरी हैं ताकि सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले सामान्य या गरीब परिवार के विद्यार्थी भी सार्थक जीवन यापन में समर्थ हो सकें।

सम्वर्तक सिंह
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन-1)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

सत्र	राज्य स्तर पर भाग लेने वाले छात्रों की संख्या	राष्ट्रीय स्तर की उपब्धियाँ
2017-18	16576	लोक नृत्य में जीता प्रथम पुरस्कार
2018-19	18415	लोक नृत्य में सांत्वना पुरस्कार
2019-20	21,836	लोक नृत्य में जीता द्वितीय पुरस्कार

विभाग द्वारा ग्रीष्मावकाश में कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग हरियाणा के सहयोग से समर कैंप का आयोजन किया जाता है। इन में विद्यार्थियों को कला और शिल्प, पेंटिंग, मिट्टी के बर्तन, ओरिगेमी, हस्तशिल्प, रंगमंच- (नाटक, एक अभिनय नाटक और लघु नाटक), नृत्य, वाद-विवाद और भाषण जैसी विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने का अवसर प्रदान किया जाता हैं।

सत्र	ग्रीष्मकालीन शिविरों में भाग लेने वाले स्कूलों की संख्या	ग्रीष्मकालीन शिविरों में भाग लेने वाले छात्रों की संख्या
2017-18	230	36,000
2018-19	518	74,126
2019-20	932	1,00,752

कला शिक्षकों का ऑनलाइन प्रशिक्षण और प्रतियोगिताएँ:

विभाग द्वारा कला / ड्राइंग शिक्षकों / पीजीटी ललित कलाओं के लिए ऑनलाइन प्रशिक्षण और कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं। इन में देश प्रख्यात कलाकारों को रिसोर्स पर्सन के रूप में आमंत्रित किया जाता है। विद्यालय स्तर पर ऑनलाइन चित्रकला प्रतियोगिता/ निबंध प्रतियोगिता/ वाद-विवाद/ प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा भारत सरकार द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तर की चित्रकला प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने भाग लिया।

कला और संगीत गतिविधियों के लिए अनुदानः

राजकीय विद्यालयों में कला एवं संगीत को सुदृढ़ करने तथा अधिकतम विद्यार्थियों को सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु सरकार ने वर्ष 2017 में स्वर्ण जयंती सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यालयों को धनराशि उपलब्ध कराने की पहल की है। इस योजना के अंतर्गत विद्यालयों को वेशभूषा, संगीत वाद्ययंत्र आदि खरीदने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की गई थी। विभाग के इन्हीं प्रयासों से सांस्कृतिक गतिविधियों में छात्रों की भागीदारी हर साल बढ़ रही है। विभाग ने 2019-20 तक 2670 स्कूलों को कवर किया है और जल्द ही सभी राजकीय विद्यालयों को चरणबद्ध तरीके से कवर किये जाने की योजना है। विद्यालयों को वर्षवार इन गतिविधियों के लिए अनुदान दिया जा रहा है।

कला एवं संस्कृति क्लब :

सत्र 2021-22 में अपने प्रदेश की कला-संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए मॉडल संस्कृति विद्यालयों में कला एवं संस्कृति क्लब बनाए गए हैं। कला गतिविधियों को सुचारु रूप से चलाने के लिए पहले चरण में 137 विद्यालयों को 40,000 रुपये प्रति विद्यालय की दर से अनुदान प्रदान किया गया। कोरोना-काल में अवसर एप के माध्यम से 'कलाकृति' कार्यक्रम चलाया गया, जो विद्यार्थियों के लिए बहुत लाभकारी रहा।

जॉयफुल सैटरडेः

विद्यालय शिक्षा विभाग हरियाणा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए कटिबद्ध है। इसके लिए आवश्यक है कि विद्यार्थी सांस्कृतिक मूल्यों, लोक कला, विरासत और समाज के रीति-रिवाजों को जाने और समझें। शनिवार के दिन सभी विद्यालयों में ऐसी गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। विद्यालय, खंड, जिला और राज्य स्तर पर नृत्य, नाटक, संगीत, कला आदि के रूप में सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है।

राष्ट्रीय बालरंग महोत्सव में हरियाणा की धूम :

बालरंग उत्सव सांस्कृतिक उत्सव का एक हिस्सा है। विभाग द्वारा लोक नृत्य की राज्य स्तरीय प्रथम स्थान प्राप्त टीम को राष्ट्रीय बालरंग महोत्सव में भाग लेने के लिए भेजा जाता है। गौरतलब है कि इस महोत्सव का आयोजन हर साल में भोपाल मध्यप्रदेश के स्कूल शिक्षा विभाग के सहयोग से इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय द्वारा किया जाता है, जिसमें देश के अनेक राज्य भाग लेते है। इस महोत्सव में हरियाणा की काफी धूम है। हरियाणा की टीम ने इस राष्ट्रीय स्तर के बालरंग महोत्सव में अलग अलग वर्षों में प्रथम/द्वितीय पुरस्कार जीत चुकी है।

drpradeeprathore@gmail.com

किशोर-मन को पंख लगाते सांस्कृतिक उत्सव

डॉ. ओमप्रकाश कादयान

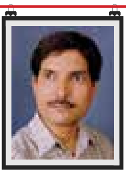

इसमें कोई संदेह नहीं कि आज हम विकास की ऊँचाइयों को छू रहे हैं। लहलहाती फसलों की जगह बड़े-बड़े उद्योग स्थापित हो गए, आँखों को सुकून देने वाले, जानवरों को पनाह व सभी को जीवन देने वाले जंगलों की जगह कंक्रीट के जंगल यानी बहुमंजिला इमारतें बन गईं, खेल के मैदान कम हो गए, हमारे पारंपरिक जल स्रोत बर्बाद हो गए, हर खाने की चीजों में मिलावट हो रही है। परिणामस्वरूप हम सुविधा संपन्न होते हुए भी बीमार व तनावग्रस्त हैं। ये सब इसलिए हो रहा है कि हम अपनी ही संस्कृति को भूल गए हैं। लोक कला से दूर हो गए। पारंपरिक तौर तरीके व रिवाजों को हमने बिसार दिया। हमने प्रकृति व संस्कृति से लगाव छोड़ दिया। हम अपनी ही जड़ों से कटकर इतने असहाय हो गए कि हल्की सी हवा हमें बहा सकती है। किसी विद्वान ने कहा था कि अगर कोई देश बर्बाद करना हो तो सबसे पहले उसकी संस्कृति पर हमला करो। जिस देश के लोग अपनी समृद्ध संस्कृति, लोक कलाओं व परंपराओं को भूल जाएँगे, निःसंदेह बहुत शीघ्र वह देश पतन के रास्ते पर चला जाएगा। आज भारत के साथ कुछ ऐसा ही हो रहा है। विकास तो यहाँ चरम पर है, किंतु दूसरी तरफ हम उसका भारी खामियाजा भी भुगत रहे हैं। अगर हमें देश व समाज को बचाना है तो हमें विकास के साथ-साथ संस्कृति व प्रकृति से भी तालमेल बिठाना पड़ेगा। इस बात को हम जितना जल्द समझ जाएँ उतना ही बेहतर होगा। ऐसी बात नहीं है कि सभी अपनी सांस्कृतिक संपदा के प्रति उदासीन हैं। हमारे ही बीच कुछ ऐसे व्यक्तित्व भी हैं जो अपने कर्तव्यों के प्रति देश, समाज, वातावरण, प्रति व विरासत के प्रति सचेत हैं। किंतु ऐसे लोग कम हैं।

हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग, पंचकूला में कार्यरत कुछ अधिकारी हैं जो अपनी सामाजिक परिवर्तन वाली सकारात्मक सोच, बेहतर योजनाओं, कुशल कार्यशैली, निष्ठावान भाव से सार्थक प्रयास कर रहे हैं। वे जानते हैं देश को हर तरह से मज़बूत करना है तो शिक्षा में संस्कार का समावेश अति आवश्यक है। इसका सबसे बेहतर तरीका है कि विद्यार्थियों को संस्कारवान बनाएँ। उन्हें अच्छी शिक्षा के साथ-साथ संस्कार, संस्कृति व प्रकृति का आदर करना सिखाएँ। वे ये भी चाहते हैं कि विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो, यानी विद्यार्थी केवल किताबी ज्ञान तक सीमित न रहें, बल्कि अन्य विधाओं में भी पारंगत हो।

सहायक निदेशक नंदकिशोर वर्मा कहते हैं कि हम विद्यार्थियों को मानसिक और शारीरिक दोनों तरह से मजबूत बनाना चाहते हैं। विद्यार्थी पढ़-लिख कर केवल रोज़गार ही हासिल न करें, बल्कि वे अपने समाज, अपने देश के हित की ही सोचें। उनमें सहयोग, भाईचारे की

सहायक निदेशक **नन्दकिशोर वर्मा** ने कहा कि हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग, पंचकूला द्वारा शुरू किये गए सांस्कृतिक उत्सव विद्यार्थियों के लिए वास्तव में उपयोगी, लाभकारी सिद्ध हो रहे हैं। ये बच्चों के लिए ऐसी ऊर्जा का काम कर रहे हैं, जो उन्हें अधिक सक्रिय, जोशीला, ऊर्जावान बना रही है। सांस्कृतिक उत्सव बच्चों के लिए मस्ती का, उल्लास का, खुशी का, सीख देने का तथा अपनी परम्पराओं से जुड़ने का माध्यम हैं। सांस्कृतिक उत्सव, बेहतर नागरिक बनाने व कामयाब इंसान बनाने में मदद कर रहे हैं। इन उत्सवों से लुप्त हो रही हमारी समृद्ध परम्पराओं, लोक कलाओं से भी नई पीढ़ी रू-ब-रू हो हो रही है। इससे लोक कलाओं को नवजीवन व बल मिल रहा है।

भावना हो।

कार्यक्रम अधिकारी राम कुमार का भी यही कहना है कि वे कुछ समय दूसरे लोगों की भलाई व उत्थान के लिए भी निकालें। उन्हें वातावरण की चिंता हो, समाज में व्याप्त बुराइयों से लड़ें। कार्यक्रम अधिकारी पूनम अहलावत का मानना है कि अगर हम अपनी संस्कृति को भूल जाएँगे तो कभी खुश नहीं रह सकेंगे। आज समाज में बुराइयों ने इसलिए जगह बना ली क्योंकि हम अपनी जड़ों से कटते जा रहे हैं। इसी के समाधान के लिए शिक्षा विभाग में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए कल्चरल फेस्ट शुरू किए हैं।

पिछले कुछ वर्षों से आरंभ हुए सांस्कृतिक उत्सव के बेहतर परिणाम भी आ रहे हैं। हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग की ओर से पहले तो प्रदेश भर में खंड स्तर पर सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन किया जाता है। उसके बाद जो विद्यार्थी खंड स्तर पर विजेता रहते हैं उनके लिए जिले स्तर पर उत्सव का आयोजन धूमधाम से किया जाता है। सभी प्रतिभागिओं के लिए प्रमाण-पत्र, खाने-पीने की व्यवस्था भी शिक्षा विभाग की ओर से की जाती है। उसके उपरांत राज्य स्तरीय सांस्कृतिक उत्सव का आगाज पूरे जोर-शोर से किया जाता है। ऊर्जा और उल्लास से भरे इस महोत्सव का शुभारंभ सहायक निदेशक नंदकिशोर वर्मा कार्यक्रम अधिकारी पूनम अहलावत की देखरेख में किसी उच्च अधिकारी से करवाया जाता है।

इस बाल कलाकारों के महासंगम में हरियाणा भर से करीब 2500 बाल कलाकार अति उत्साह के साथ भाग लेते हैं। कार्यक्रम स्थल दुल्हन की तरह सजी होता है। सामूहिक लोक नृत्य, एकल नृत्य, समूह गान, रागिनी, नाटक सब के लिए अलग-अलग मंच बनाए जाते हैं। ताकि सभी कार्यक्रम सुगमता से आयोजित हो जाएँ। साँझी प्रतियोगिता का अलग सुरक्षित स्थान होता है। शिक्षा विभाग द्वारा सभी के रहने व खाने-पीने की सुविधा होती है। प्रतिभागी विद्यार्थियों के लिए प्रोत्साहन हेतु 2500 से लेकर 20,000 तक की राशि इनाम की रखी जाती है। तीन दिन तक चलने वाले इस बाल महोत्सव में सभी अपनी-अपनी तैयारियों, अपने-अपने काम में व्यस्त दिखाई देते हैं। इस सांस्कृतिक उत्सव में यह खास

ख्याल रखा जाता है कि पारंपरिक हरियाणवी संस्कृति को बढ़ावा मिले इसलिए साँझी बनाओ प्रतियोगिता में जो हमारे ग्रामीणांचल में पुराने समय से साँझी दीवारों पर बनती आ रही है, उसी स्वरूप में साँझी बनानी होती है, ताकि नई पीढ़ी लुप्त होती इस कला से परिचित रहे। गोबर, मिट्टी, गेरू, कोडी, चूना, हल्दी आदि के प्रयोग से ही प्रतिभागी साँझी बनाते हैं। बाज़ार से खरीदा गया सामान साँझी में स्वीकार्य नहीं होता। यह बात अलग है कि विद्यार्थी साँझी बनाने में हर वर्ष कमाल की कलाकारी दिखाते हैं।

दूसरी तरफ लोक नृत्य में भी पारंपरिक वेशभूषा, ठेठ लोक गीत, लोक संगीत ही मान्य हैं। विद्यार्थी कुछ गाते हैं तो कुछ नृत्य करते हैं। इससे एक साथ हरियाणवी लोक नृत्य, लोक गायन, लोक संगीत, लोक गीत जैसी लुप्त होती जा रही हमारी सांस्कृतिक विरासत को जहाँ बढ़ावा मिल रहा है, वहीं गायन क्षेत्र में अनेक प्रतिभाएँ उभर रही हैं। नृत्य के साथ गाने वाली छात्राएँ व छात्र कमाल के सुर निकालते हैं। इससे धीरे-धीरे कुछ वर्षों में हरियाणा में बहुत से कामयाब गायक-गायिकाएँ प्रकाश में आएँगे। यह विद्यालय शिक्षा विभाग की बड़ी उपलब्धि होगी। रागिनी भी खत्म होती परंपरा है। कभी वे दिन थे कि रागिनी मनोरंजन, शिक्षा देने का खास माध्यम होती थी, किंतु जैसे-जैसे हम विकास करते गए, मनोरंजन के साधन बदलते गए। रागिनी गायकी दम तोड़ती गई। शिक्षा विभाग की बदौलत रागिनी को नवजीवन मिल रहा है। लोक संगीत के साथ लोक स्वर वातावरण में गूँजते, सुनाई देते हैं। अनेक प्रतिभाएँ उभर रही हैं, लड़कियाँ भी रागिनी गायन में कमाल की प्रस्तुतियाँ दे रही हैं। वहीं नाटकों के माध्यम से हरियाणवी रंगमंच को पुनर्जीवन मिल रहा है। राज्य स्तरीय सांस्कृतिक उत्सव में विद्यार्थियों ने नाटकों के माध्यम से अपनी प्रभावशाली छाप छोड़ी है। ये नाटक बच्चों के हृदय परिवर्तन करने में जरूर सहयोगी हो रहे हैं। नाटकों के जरिए समाज के व्याप्त बुराइयों, कुरीतियों पर जहाँ करारा कटाक्ष किया जाता है, वहीं पर्यावरण की चिंता भी झलकती प्रतीत होती है। इसी तरह रागनियों के माध्यम से भी शिक्षाप्रद सीख दी जाती है। इन सबका असर नई पीढ़ी पर अवश्य पड़ेगा और यही असर बड़े सामाजिक बदलाव का कारण बन सकता है। शिक्षा विभाग के आयोजक अधिकारियों की सकारात्मक व दूरगामी सोच बेहतर परिवर्तन ला सकती है, ऐसी उम्मीद हम कर सकते हैं।

कार्यक्रम अधिकारी **पूनम अहलावत** ने कहा कि हम इस तरह के सांस्कृतिक उत्सवों से एक समृद्ध राष्ट्र का निर्माण कर रहे हैं, वहीं बच्चों को सृजनात्मकता से जोड़कर उन्हें सफल नागरिक बना रहे हैं। पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों का कला के प्रति रुझान बढ़ रहा है। बच्चे अपनी संस्कृति से जुड़ रहे हैं तथा प्रकृति की महत्ता समझ रहे हैं। बच्चों को आत्मनिर्भर होने में मदद मिल रही है।

राज्य स्तरीय सांस्कृतिक उत्सव के समापन पर प्रतिभागी, विजेता बच्चों को, सहयोगी शिक्षकों को सम्मानित किया जाता है। इस पूरे कार्यक्रम के दौरान शिक्षा विभाग के उच्चाधिकारियों का पूरा सहयोग, आशीर्वाद व संरक्षण रहता है।

ये सांस्कृतिक उत्सव नई पीढ़ी में भावों, विचारों, नए बदलावों के ऐसे बीज बो रहे हैं जो आगे जाकर कला व सांस्कृतिक रुचि के विशाल वृक्ष बन सकेंगे। पढ़ाई के साथ सांस्कृतिक विरासत से बच्चों का जुड़ाव अच्छे संकेत हैं। आगे जाकर एक ऐसा समाज तैयार हो सकता है, जो विकास तो खूब करेगा किंतु हमारी पारंपरिक विरासत को गँवा कर या प्रति का विनाश कर के नहीं, बल्कि विकास, कला, संस्कृति, परंपरा, प्रति से तालमेल बिठाकर। जिस सांस्कृतिक संपदा को, संस्कारों की पिटारी को, हम गँवा रहे हैं उन्हें दोबारा से संरक्षित व विकसित कर सकेंगे। लोक कलाओं, लोक साहित्य, लोक परंपराओं का फिर से सम्मान होगा ऐसी हम उम्मीद कर सकते हैं।

ये सांस्कृतिक उत्सव निःसंदेह जहाँ विद्यार्थियों की प्रतिभा निखारने, उन्हें तराशने, प्रोत्साहित करने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं, वहीं ऊर्जा, उत्साह, नया जोश भरने में कामयाब हो रहे हैं, जिससे हमारी किशोर व युवा पीढ़ी देश-हित में काम कर रही है। अनेकता में एकता की भावना का सूत्रपात हो रहा है।

राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
एमपी रोही, फतेहाबाद, हरियाणा

विद्यार्थियों में उत्साह भरते कला उत्सव

हमारी शिक्षा पद्धति जब तक देश व समाज के लिए अधिक लाभकारी सिद्ध नहीं हो सकती जब तक इसे कलाओं, संस्कृति व संस्कार से नहीं जोड़ा जाए। ऐसी बात नहीं है कि पाठ्यक्रम की शिक्षा संस्कार न सिखाती हो, किंतु किताबी ज्ञान के साथ-साथ बच्चों को सांस्कृतिक उत्सवों व कलात्मक गतिविधियों से जोड़ा जाए तो बच्चे मस्तिष्क के साथ-साथ तन व मन से भी मजबूत बनते हैं। उनमें हर तरह की परिस्थितियों से आसानी से जूझने तथा जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण फैसले लेने की क्षमता आ जाती है, वे सामाजिक बनते हैं, देश, दुनिया की सोचते हैं। प्रकृति व संस्कृति से सीधे तौर पर जुड़ते हैं। वे काफी हद तक संस्कारवान बनते नजर आते हैं। पिछले कुछ वर्षों से इस विषय पर शिक्षाविदों, उच्चाधिकारियों का ध्यान गया तथा कुछ जरूरी व खास आयोजनों का आरंभ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए किया गया। बालरंग, एडवेंचर गतिविधियाँ तथा कल्चरल फैस्ट की भाँति ही ऊर्जा व उत्साह से भरे एक और आयोजन की शुरुआत पिछले कुछ वर्षों से की गई जिसका नाम है 'कला उत्सव'।

हालांकि कला उत्सव मानव संसाधन विकास मंत्रालय की पहल है, किंतु हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद व समग्र शिक्षा अभियान द्वारा राज्य स्तर तक पूरी ऊर्जा के साथ कला उत्सवों का आयोजन किया जाता है। राष्ट्रीय स्तर पर भी हरियाणा की भागीदारी शानदार तरीके से होती है तथा राष्ट्रीय स्तर पर अपने श्रेष्ठ प्रदर्शन से यादगार जीत दर्ज करवाती है। विद्यालय शिक्षा विभाग की ओर से पहले तो इसका आयोजन जिला स्तर पर किया जाता है फिर राज्य स्तर पर। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास व कलात्मक गतिविधियों से जोड़ने के लिए चार विधाओं का आयोजन किया जाता है- दृश्य कला, संगीत, नृत्य, नाटक। दृश्य कला में कई कलाओं का समावेश होता है-पेंटिंग, ड्राइंग, कोलाज, मूर्तिकला, टेराकोटा आदि। कला उत्सव आयोजनों का लक्ष्य यही है कि विद्यार्थी अच्छी शिक्षा के साथ-साथ संस्कारवान् बनें तथा संस्कृति व प्रकृति का आदर करना सीखें। बच्चे केवल किताबी ज्ञान तक सीमित न रहें, बल्कि अन्य विधाओं में भी पारंगत हों।

परंपराएँ व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के स्थान पर सामुदायिक विस्तार को दर्शाती हैं, जिसका प्रभाव समाज के संपूर्ण विकास पर पड़ता है। कला शिक्षा को एक ऐसे माध्यम के रूप में ग्रहण किया जा सकता है जो विद्यार्थियों में सौंदर्यबोध विकसित करेगी जिससे वे कला के विभिन्न रूपों-रंग, ध्वनि और गति पर अपनी प्रतिक्रिया दे सकें। कला शिक्षा, विद्यार्थियों को संसार की सुंदरता को अनुभव कर उसकी सराहना करने योग्य बनाती है और उनके संपूर्ण विकास में सहयोग करती है। कला शिक्षा रचनात्मकता, समस्या समाधान, कल्पना-शक्ति और बेहतर अभिव्यक्ति की क्षमता को बढ़ाती है। यह तेजी से बिखरते और हिंसक होते समाज को सौंदर्य

और कला के एक वैकल्पिक नजरिये से देखने में मदद करती है, जो विद्यार्थी के संपूर्ण विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है। कला उत्सव संकोच दूर करने, कल्पना के विस्तार, अन्वेषण और रचनात्मकता को बढ़ावा देने, नैतिक मूल्यों को पोषित करने और व्यक्ति के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हमारे परंपरागत सांस्कृतिक मूल्यों में भी गिरावट आई क्योंकि शिक्षा में उन विषयों को अति महत्त्व दिया गया जो हमारी सांस्कृतिक जड़ों से कटे थे, इससे हमारी कलाएँ पिछड़ गईं। कला उत्सव इस अंतर को भरने की एक पहल है जो विद्यालय और समाज के बीच एक सुखद रिश्ता कायम कर रहा है। यह मंच माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की प्रतिभाओं को प्रदर्शित करने के लिए प्रोत्साहित करता है और उनकी कला को केंद्रीय मंच तक ले जाता है। कला उत्सव विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को मुख्यधारा से जोड़ने और उनकी योग्यताओं को एक नई पहचान देने के लिए उन्हें एक अवसर और अनुकूल वातावरण प्रदान करता है। यह उनकी प्रतिभाओं को प्रदर्शित करने के साथ उनके लिए अधिगम को अधिक मूर्त, रचनात्मक और आनंदपूर्ण बनाने में सहयोग करता है। कला उत्सव स्कूली व्यवस्था में कला रूपों का एक अग्रणी उत्सव है।

कला उत्सव विद्यार्थियों को जीवंत पारंपरिक कला को खोजने, समझने और प्रस्तुति में सहयोग करता है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों को विद्यालय में, जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर की सांस्कृतिक विविधता को समझने और उत्सव मनाने का अवसर मिलता है। यह उत्सव न केवल शिक्षार्थियों में जागरूकता फैला रहा है, वरन भारत की सांस्कृतिक विरासत और उसकी जीवंत विविधता को दूसरे कला प्रेमियों तक भी ले जा रहा है। भविष्य में यह शिल्पकारों, कलाकारों और संस्थाओं को विद्यालय के साथ जोड़ने में मदद करेगा। कला उत्सव, इसमें भाग लेने वाले विद्यार्थियों के जीवन-कौशल को बढ़ाएगा और उन्हें संस्कृति के वाहक के रूप में तैयार करेगा। बच्चे हमारा भविष्य हैं इसलिए हमारे विद्यालय भारत के भविष्य की प्रयोगशालाएँ हैं। कला उत्सव हमारी विभिन्न मूर्त और अमूर्त सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को पहचानने और सहयोगी बन रहा है। इस पहल से भिन्न रूप से सक्षम बच्चों को उनकी छिपी हुई प्रतिभाओं को दिखाने का बेहतर अवसर मिलेगा। बाद में वे अपने जैसे दूसरे बच्चों के साथ अपनी कलाओं को साँझा कर सकेंगे। इस प्रक्रिया से उनकी मौलिक प्रतिभाएँ जमीनी स्तर से निकलकर राष्ट्रीय स्तर तक आ रही हैं।

कला उत्सव के स्टेट कोर्डिनेटर रहे दिबाकर दास तथा कुरुक्षेत्र के एपीसी सतबीर कौशिक ने बताया कि बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए कला उत्सव में राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार के रूप में क्रमशः पाँच लाख, तीन लाख व दो लाख रुपये की राशि प्रदान की जाती है। जिला व राज्य स्तर पर भी बच्चों को सम्मानित किया जाता है। हरियाणा में कला उत्सव प्रथम बार वर्ष 2015-16 में सरकारी तथा

मान्यता प्राप्त विद्यालयों के कक्षा नौवीं से 12वीं तक के विद्यार्थियों हेतु राज्य परियोजना निदेशक, हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद्, पंचकूला के तत्वावधान में पहले विद्यालय स्तर पर, खंड स्तर पर तथा जिला स्तर पर प्रतियोगिताएँ करवाई गई जिसमें विद्यार्थियों ने प्रतियोगिताओं के अंतर्गत चार विधाओं- नृत्य, गायन, नाट्य, दृश्य कलाओं में बड़ी उत्सुकता से भाग लेते हैं। कलाकारों के महासंगम में हरियाणा भर के कई हज़ार बाल कलाकार अति उत्साह के साथ भाग लेते हैं। कार्यक्रम-स्थली दुल्हन की तरह सजी होती है, लोक कलाएँ प्रदर्शित करने के लिए अलग-अलग मंच बनाए जाते हैं, ताकि सभी कार्यक्रम सुगमता से आयोजित हो जाएँ। इस बाल महोत्सव में सभी अपनी-अपनी तैयारियों, अपने-अपने काम में व्यस्त दिखाई देते हैं। इस सांस्कृतिक उत्सव में यह खास ख्याल रखा जाता है कि पारंपरिक हरियाणवी संस्कृति को बढ़ावा मिले। दूसरी तरफ लोक नृत्य में पारंपरिक वेशभूषा, ठेठ लोक गीत, लोक संगीत बच्चों को अपनी संस्कृति से जोड़ते हैं। लोक संगीत, लोक गीत जैसी लुप्त होती जा रही हमारी सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा मिल रहा है तथा अनेक प्रतिभाएँ उभर रही हैं।

राज्य स्तरीय सांस्कृतिक उत्सव में विद्यार्थियों ने नाटकों के माध्यम से अपनी प्रभावशाली छाप छोड़ी है। ये नाटक बच्चों के हृदय परिवर्तन करने में जरूर सहयोगी होते हैं। नाटकों के जरिए समाज की व्याप्त बुराइयों, कुरीतियों पर जहाँ करारा कटाक्ष किया जाता है, वहीं पर्यावरण की चिंता भी झलकती प्रतीत होती है, इसी तरह रागनियों के माध्यम से भी शिक्षाप्रद सीख दी जाती है। इसी तरह अन्य कलाएँ भी अपना प्रभाव छोड़ती हैं। ये सांस्कृतिक उत्सव नई पीढ़ी में भावों, विचारों, नए बदलावों के बीज बो रहे हैं जो आगे जाकर कला व सांस्कृतिक रुचि के वृक्ष बन सकेंगे। पढ़ाई के साथ सांस्कृतिक विरासत से बच्चों का जुड़ाव अच्छे संकेत हैं। आगे जाकर एक ऐसा समाज होगा, जो विकास तो खूब करेगा किंतु हमारी पारंपरिक विरासत को गँवा कर या प्रकृति का विनाश करके नहीं, बल्कि कला, संस्कृति, परंपरा, प्रकृति से तालमेल बिठाकर। जिस सांस्कृतिक संपदा को, संस्कारों की पिटारी को, हम गँवा रहे हैं उसे दोबारा से संरक्षित विकसित कर सकेंगे। लोक-कलाओं, लोक साहित्य, लोक परंपराओं का फिर से सम्मान होगा ऐसी हम उम्मीद कर सकते हैं।

डॉ. सुमन कादयान
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग ओम स्टर्लिंग
ग्लोबल यूनिवर्सिटी, हिसार, हरियाणा

लोक कला और संस्कृति का समागमः कल्चरल फेस्ट

सुरेश राणा

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में पाठ्य सहगामी क्रियाएँ अपनी महती भूमिका अदा करती हैं। ये क्रियाएँ और शैक्षिक गतिविधियाँ एक दूसरे की पूरक हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा को तराशने का भरपूर अवसर मिलता है। प्रत्येक विद्यार्थी अपने आप में विशिष्ट होता है। कोई पढ़ने में अधिक रुचि लेता है, किसी को खेलना बहुत पसंद है तो कोई पेंटिंग, साहित्यिक गतिविधियों, नृत्य कला, गायन-वादन व अन्य क्षेत्रों में प्रतिभावान हो सकता है। अतः रुचि, और क्षमता के आधार पर उन्हें व्यक्तित्व विकास के समान अवसर उपलब्ध करवाए जाने चाहियें तथा उनकी प्रतिभा को पहचान कर उन्हें तराशने के भरपूर प्रयास करने चाहियें। विद्यार्थियों को केवल किताबी ज्ञान प्रदान करना ही नहीं बल्कि उनका सर्वांगीण विकास करना ही शिक्षा का लक्ष्य है। अन्य गतिविधियाँ भी उनके लिए उतनी ही आवश्यक हैं जितना कि शैक्षिक ज्ञान।

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा विद्यार्थियों को गुणवत्तापरक शिक्षा देने तथा उनके सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है। इसके लिए समय-समय पर खेल प्रतियोगिताओं, एडवेंचर कैम्प, स्काउट गतिविधियाँ, कला उत्सव, कल्चरल फेस्ट, बालरंग, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आदि पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन करता है। जिनमें विद्यार्थी बढ़ चढ़कर भाग लेते हैं और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं। इन पाठ्य सहगामी गतिविधियों के अंतर्गत कल्चरल फेस्ट हम सबके आकर्षण का केंद्र है। कल्चरल फेस्ट यानी सांस्कृतिक उत्सव जिसके माध्यम से विद्यार्थी हरियाणवी लोक संस्कृति से रु-ब-रु होते हैं। इस प्रतियोगिता में रागनी, लोक गीत, लोक नृत्य, स्किट, साँझी बनाओ विधाएँ शामिल की जाती हैं।

हमारी लोक सांस्कृतिक विरासत का सरंक्षण तथा उसका संवर्धन करके अगली पीढ़ी तक हस्तांतरित करने के लिए विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा निरन्तर प्रयासरत है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु स्कूली छात्र-छात्राओं लिए 2017-18 में शुरुआत की गई 'कल्चरल फेस्ट' की, जिसके माध्यम से सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए अपनी कला और प्रतिभा का प्रदर्शन करने हेतु एक बहुत बड़ा मंच उपलब्ध करवाया गया है। इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों के दो समूह बनाए जाते हैं- कनिष्ठ समूह, जिसमें कक्षा पाँचवी से आठवीं के विद्यार्थी तथा वरिष्ठ समूह में नौवीं से बारहवीं के विद्यार्थी भाग लेते हैं।

इसमें खण्ड स्तर से लेकर राज्य स्तर तक लोक नृत्य, लोक गीत, सांझी बनाओ तथा स्किट प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

'कल्चरल फेस्ट' वास्तव में हरियाणवी संस्कृति का एक समागम है, जिसमें चारों ओर हरियाणवी लोक संस्कृति की छटा बिखरी हुई दिखाई देती है। लोक

परिधान में सजे-धजे छात्र-छात्राएँ दमकते और महकते नज़र आते हैं। सिर पर सजी हुई रंग-बिरंगी पगड़ी, धोती-कुर्ता, घाघरा, बहुरंगी सितारे जड़ित चूंदड़, कंठी, गल्सरी, झालरा, बोरला, पाजेब, तागड़ी आदि लोक परिधान और आभूषण जो प्रायः पाश्चात्य संस्कृति की आँधी में ओझल हो गए हैं इस सांस्कृतिक उत्सव में दिखाई पड़ते हैं। ढ़ोल-नगाड़े, मंजीरे, खड़ताल, बैंजो, सारंगी, डमरू, चिमटा, बीन, तुम्बा आदि वाद्य यंत्र की मधुर धुन और राग- रागनियों की स्वर लहरियाँ कल्चरल फेस्ट में सबको मंत्र मुग्ध कर देती हैं। ढोलक की थाप, घुंघरुओं की रुनझुन-रुनझुन, राग-रागनियों की स्वर लहरियाँ और हरियाणवी धुनों और गीतों पर थिरकते छोटे-छोटे बच्चे समा बाँध देते हैं।

हरियाणा के अपने लोक नृत्य हैं जिनमें धमाल, घूमर, झूमर, खोडिया, रासलीला, गुग्गा डांस, छटी नृत्य, तीज नृत्य, चौपाया नृत्य और लूर नृत्य आदि शामिल हैं जो हरियाणा के अलग-अलग क्षेत्रों में प्रचलित हैं। कल्चरल फेस्ट में लोक नृत्य विधा प्रतियोगिता में एकल नृत्य और समूह लोक नृत्य शामिल किए गए हैं। घूमर-धमाल आदि लोक नृत्यों पर छात्र-छात्राएँ जोश से लबरेज होकर लयबद्ध तरीके से थिरकते हैं तो दर्शक उनकी प्रतिभा देखकर दाँतों तले उँगली दबा लेते हैं। इस सांस्कृतिक महोत्सव में ठेठ हरियाणवी गीत- हो! मेरा चूंदड़ मँगादे, ओ! नणदी के बीरा, पहलम तो पीया दामण सीमा दे फेर जाइये पलटन में, दिल्ली शहर में बिके चुनरिया ओ बालम जी, मेरा नौ दांडी का बिजणा; मेरे ससुर जी न दिया घड़वा, मेरे सिर पर बंटा टोकनी; ससुरा जी लैया दे ऊँटणी मन्ने धार काढणी आवै सै आदि की गूँज सुनाई देती है, जिन पर हर कोई झूमकर नाचने को मजबूर हो जाता है।

लोक गायन विधा में रागनी और समूह लोकगीत शामिल किए गए हैं। साँझी हमारे ग्रामीण अंचल की धरोहर है, जो घर की सुख-समृद्धि व खुशहाली का प्रतीक है। साँझी लगाने की परम्परा विलुप्त होने के कगार पर है जिसको संरक्षण प्रदान करने के लिए शिक्षा विभाग ने साँझी बनाओ प्रतियोगिता को शामिल किया है। स्किट अर्थात् लघु नाटिका प्रतियोगिता के माध्यम से मनोरंजन के साथ-साथ हरियाणवी बोली में सामाजिक कुरीतियों और समस्याओं जैसे- बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, नशाखोरी, भ्रष्टाचार, दहेज-प्रथा, जाति प्रथा, आदि पर कटाक्ष कर उन्हें समूल उखाड़ने का संदेश दिया जाता है।

कल्चरल फेस्ट के अंतर्गत होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं के लिए खंड स्तर से लेकर राज्य स्तर पर प्रथम, द्वितीय और तृतीय आने वाले प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र प्रदान किये जाते हैं। खंड स्तर पर व्यक्तिगत स्पर्धा रागनी, एकल लोकनृत्य, साँझी बनाओ प्रतियोगिताओं के लिए प्रथम, द्वितीय, तृतीय को क्रमशः 500 रुपये, 300 रुपये, 200 रुपये प्रदान किए जाते हैं तो समूह विधा में लोक समूह नृत्य, लोक समूहगान और लघु नाटिका के लिए प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान अर्जित करने वाली टीमों को क्रमशः 2000 रुपये, 1600 रुपये, 800 रुपये प्रदान किए जाते हैं। खंड स्तर के बाद जिला स्तर पर एकल विधा प्रतियोगिताओं के लिए प्रथम पुरस्कार 3100 रुपये, द्वितीय 2100 रुपये, तृतीय 1500 रुपये तथा सांत्वना पुरस्कार 500 रुपये प्रदान किये जाते हैं। इसी प्रकार समूह विधा के लिए प्रथम पुरस्कार 8000 रुपये, द्वितीय 6000 रुपये, तृतीय 4000 रुपये तथा सांत्वना पुरस्कार 500 रुपये प्रदान किए जाते हैं। राज्य स्तर पर भाग लेने वाले प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार देकर प्रेरित किया जाता है।

'म्हारा हरियाणा, जीत दूध दही का खाणा' कला एवं संस्कृति की महान विरासत को समेटे हुए हैं। यहाँ के तीज-त्यौहार निराले हैं, वहीं यहाँ की कला और एवं संस्कृति अपने आप में अनूठी है। परम्पराएँ हमारे जीवन का आधार हैं तो हमारे संस्कार हमारी पहचान। हरियाणा की लोक कथाओं, राग- रागनियों, लोक नृत्यों और सांगों में यहाँ की गौरवशाली परम्पराओं का वर्णन मिलता है। हमारी लोक कला केवल मनोरंजन प्रधान नहीं है, बल्कि प्रेरणादायक भी है। इसमें सादगी, मेलजोल, भाईचारा, सरलता, साहस, मेहनत और कर्मशीलता आदि गुण समाहित हैं। हरियाणवी संस्कृति हमें सामाजिक सम्बन्धों की गरिमा का पाठ पढ़ाती है, हमें नैतिक प्रेरणा देती है

पाठ्य सहगामी गतिविधियाँ अध्ययन में सरसता और रोचकता लेकर आती हैं तथा विद्यार्थियों में नवीनता का संचरण करती हैं। ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों के बहुमुखी विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। अतः हमें किताबी ज्ञान के साथ-साथ पाठ्य सहगामी क्रियाओं पर पर्याप्त बल देना चाहिए। माध्यमिक शिक्षा आयोग, राष्ट्रीय शिक्षा आयोग, नई शिक्षा नीति आदि में भी पाठ्येतर गतिविधियों को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग माना गया है। एक शिक्षक होने के नाते मैं यह कहना चाहूँगा कि विद्यालय में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन नियमित रूप से किया जाना चाहिए तथा विद्यार्थियों को उनकी रुचि, योग्यता और क्षमता के अनुसार उनमें भाग लेने के समुचित अवसर प्रदान करने चाहिए। जिससे उनके व्यक्तित्व का संतुलित व सर्वांगीण विकास हो सके। ये क्रियाएँ पाठ्यक्रम की पूरक तथा आवश्यक अंग है। 'कल्चरल फेस्ट' विद्यार्थियों को हरियाणवी संस्कृति और लोक कलाओं से परिचय करवा रहा है। विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा इस फेस्ट का आयोजन करवाना एक सराहनीय पहल है। इसके माध्यम से विद्यार्थी अपनी लोक संस्कृति से रू-ब-रू हो रहे हैं तथा रागनी, लोक गीत, लोक नृत्य, स्किट, साँझी आदि विधाओं में पारंगत हो रहे हैं।

अरुण राणा
भूगोल प्राध्यापक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
प्योदा, कैथल, हरियाणा

और बुजुर्गों का सम्मान करना सिखाती है।

कल्चरल फेस्ट जैसी सहगामी क्रियाएँ विद्यार्थियों में टीम-भावना, आपसी समझ, तालमेल, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा आदि गुण विकसित करती हैं। इस प्रकार के सांस्कृतिक उत्सव उनमें नवीन अभिरुचियाँ विकसित करते हैं। ये गतिविधियाँ एक उच्च कोटि का नागरिक बनाने का प्रशिक्षण प्रदान करती हैं उनमें लोकतांत्रिक गुण विकसित होते हैं। जब वे किसी सहगामी गतिविधि में भाग लेते हैं तो वे समूह में कार्य करना सीखते हैं। सामाजीकरण के साथ-साथ ये सह-शैक्षिक गतिविधियाँ उनमें मानवीय गुण भी विकसित करने में सहायक हैं। विद्यार्थी आपस में एक दूसरे के विचारों से परिचित होते हैं तथा एक दूसरे की भावनाओं का आदर करना सीखते हैं। जब विद्यार्थी घर से बाहर निकलते हैं तो वे आत्मविश्वास से लबरेज हो जाते हैं। ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों में नेतृत्व के गुण विकसित करने में सहायक सिद्ध होती हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि विद्यार्थी बहुत ही ज्यादा ऊर्जावान होते हैं, इन गतिविधियों में व्यस्त रखकर उनकी ऊर्जा का उचित उपयोग किया जा सकता है।

वर्तमान में पाश्चात्य संस्कृति के वर्चस्व के कारण हमारी संस्कृति पर कुठाराघात हो रहा है। हम अपनी लोक संस्कृति और लोक कलाओं से विमुख हो रहे हैं। आज न ही किसी को लोकनृत्यों में रुचि हैं, न ही लोक गीत और न ही राग-रागनियों को गाने और सुनने का चाव रहा। वाद्य यंत्रों को बजाने वाले वादक धीरे-धीरे लुप्त होने के कगार पर हैं। अतः जरूरत है अपनी धरोहर, लोक कला और संस्कृति को बचाने की।

'कल्चरल फेस्ट' के माध्यम से लोक संस्कृति को संरक्षण मिल रहा है। बच्चे लोक नृत्य, राग-रागनियों में पारंगत हो रहे हैं जिससे भविष्य में उच्चकोटि के लोक कलाकार तैयार होंगे। इस सांस्कृतिक उत्सव के लिए शिक्षक और विद्यार्थी अच्छे खासे उत्साहित नजर आते हैं। यह एक सुखद अहसास है कि भावी पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति से दूर हटकर हरियाणवी संस्कृति को दिल से अपना रही है। आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि ये सांस्कृतिक महोत्सव लोक संस्कृति को सहेजकर नए आयाम स्थापित करेंगे।

हिंदी प्राध्यापक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
कमालपुर, खण्ड कलायत, कैथल, हरियाणा

पाठ्य सहगामी क्रियाएँ बालक के सर्वांगीण विकास के लिए बहुत ही आवश्यक उपकरण है। इनका बालक की बौद्धिक क्षमता व शारीरिक विकास पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं द्वारा बालक की जन्मजात शक्तियों (प्रतिभा)को पहचाना जाता है। इन शक्तियों की पहचान करके ही एक कुशल अध्यापक एक कुशल मार्गदर्शक की तरह उचित देखरेख व मार्गदर्शन से इन शक्तियों को चरम तक पहुँचा देता है। बीज रूप मे जो बच्चों में अलग अलग प्रतिभा है, उसे पाठ्य सहगामी क्रियाओं द्वारा ही पहचाना जा सकता है और तभी बालक की प्रतिभा का निखार होता है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं द्वारा बालक में सामाजिक गुणों के साथ साथ नैतिक गुणों का भी विकास होता है और उसके समय का सदुपयोग होता है। प्रत्येक अध्यापक को पाठ्य सहगामी क्रियाओं को विशेष महत्त्व देना चाहिए ताकि मूल प्रवृत्तियों को ऊँचाइयों तक ले जाया जा सके और बालक का सर्वांगीण विकास हो सके।

संजीव कुमार
प्राध्यापक हिंदी,
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
बुड़शाम, खण्ड इसराना, पानीपत

जैसा कि हम जानते हैं कि शिक्षा हमारे जीवन का अनिवार्य अंग है, अतः हर व्यक्ति को शिक्षित होना चाहिए। हाँ, जिंदगी की सीख केवल किताबों से ही नहीं मिलती, इसके लिए अन्य गतिविधियों में भी भाग लेना अत्यंत जरूरी है। हमारी शिक्षण व्यवस्था पाठ्यक्रम और परीक्षा के इर्द-गिर्द ही घूमती है। अधिकांश अभिभावक अपने बच्चों को परीक्षा में अधिक अंक लाने का दवाब डालते हैं। परीक्षाओं में अधिक अंक प्राप्त करना न ही सफलता का पैमाना है, न ही अधिक ज्ञान का। विद्यालयों में पढ़ाई के साथ-साथ पाठ्य सहगामी क्रियाओं का निरन्तर आयोजन करना चाहिए। जिससे बच्चों का मानसिक, शारीरिक, सामाजिक व सांस्कृतिक विकास हो। शिक्षण और पाठ्य सहगामी गतिविधियाँ, दोनों ही विद्यार्थी के संपूर्ण व्यक्तित्व को उभारने में सहायक होती हैं। हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग सरकारी स्कूलों में शैक्षणिक पाठ्यक्रम के अलावा पाठ्य सहगामी गतिविधियों को भी निरन्तर बढ़ावा दे रहा है ताकि विद्यार्थियों में किताबी ज्ञान के साथ-साथ अन्य कौशल भी विकसित हो। सरकारी स्कूलों के बच्चों के लिए सांस्कृतिक उत्सव हमारी हरियाणवी संस्कृति को सहेजने का सराहनीय आयोजन है। हमारी अपनी संस्कृति की विशिष्ट पहचान है।

भूप सिंह
प्राथमिक शिक्षक
राजकीय प्राथमिक पाठशाला, उदित पाधापुर
खण्ड बवानी खेड़ा, भिवानी, हरियाणा

शिक्षकों की रचनात्मकता में नए रंग भर गया रंगोत्सव

सत्यवीर नाहड़िया

विद्यार्थियों के कला उत्सव की तर्ज पर शिक्षकों के लिए शिक्षा विभाग द्वारा पहली बार आयोजित किया गया रंगोत्सव उनकी रचनात्मकता तथा कलात्मकता में नए रंग भर गया। ऑनलाइन कला उत्सव का बहुआयामी प्रेरक मार्गदर्शन कर चुके शिक्षकों ने शिक्षा विभाग के इस नए रचनात्मक प्रकल्प में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया तथा उन्होंने विभाग की इस नयी प्रेरक पहल की मुक्त कंठ से प्रशंसा भी की।

कला उत्सव के ऑनलाइन प्रारूप के सफल संयोजन से आत्मविश्वासी हो चुके समग्र शिक्षा अभियान की राज्य स्तरीय प्रतिनिधि टीम ने रंगोत्सव के नए प्रकल्प से सरकारी शिक्षकों में नई जान फूँक दी।

रंगोत्सव में भी कला उत्सव की तर्ज पर गायन, वादन,नृत्य तथा दृश्य कला से जुड़ी विधाओं को शामिल किया गया। इन प्रतियोगिताओं में एक ओर जहाँ लोकगायन लोकनृत्य तथा लोककलाओं को केंद्र में रखा गया, वहीं दूसरी ओर इन सभी विधाओं में शास्त्रीय पक्ष को भी पूरा महत्त्व दिया गया, जिसके चलते जहाँ, नृत्य, गायन व वादन पक्ष में फोक व क्लासिकल वर्ग की प्रतियोगिताएँ आयोजित करवायी गयीं, वहीं दृश्य कला के अंतर्गत भी लोकसंस्कृति के संरक्षण के साथ शास्त्रीय प्रारूपों में द्विआयामी तथा त्रिआयामी रचनाधर्मिता को केंद्र में रखा गया। हर वर्ष कला उत्सव में अपने विद्यार्थियों को संबंधित प्रतियोगिताओं के लिए तैयार करने वाले शिक्षकों ने इन प्रतियोगिताओं को हाथों हाथ लिया। कहीं शिक्षक गा रहे थे, तो कहीं बजा रहे थे। कहीं पूरी कॉस्ट्यूम के साथ लोकनृत्य को जीवंत करने की साधना हो रही थी तो कहीं भारतीय संगीत एवं नृत्य के प्रति समर्पण दिख रहा था। कहीं विलुप्त होती लोककलाओं पर आधारित कल आ रही थी,तो कहीं सैंड आर्ट व पेंटिंग की मुँह बोलती प्रस्तुतियाँ रंगोत्सव में रंग भर रही थीं। कहीं शिक्षक छात्र-छात्राओं की भूमिका में नजर आ रहे थे, तो कहीं उन्हें अपना छात्र जीवन अनायास याद हो आया था। ऐसा लग रहा था कि कभी लौटकर न आने वाले समय का पहिया एक बार वापिस घूम गया था। कहीं स्कूल, घर तथा संगीतशालाओं में रियाज़ जारी थे, तो कहीं अपनी चित्रकारी, अपनी कलाकृतियों में निरंतर नवाचारी परिवर्तन किए जा रहे थे। प्रतिभागी शिक्षकों के अलावा उनके सहयोगी इन तैयारियों में अपना बहुआयामी रचनात्मक सहयोग देने में जुटे हुए थे। सरकारी स्कूलों के प्रांगण, माहौल तथा शिक्षकों में एक नई ऊर्जा का संचार हो रहा था। कहीं हास-परिहास भी था तो कहीं गंभीर विमर्श भी। कहीं महिला शिक्षकों को बैंजो बजाते देखकर आश्चर्य हुआ तो कहीं विलुप्त होते लोक वाद्ययंत्रों सारंगी, ढोल-नगाड़े, ढप आदि पर शिक्षकों को अपनी प्रस्तुति दे देते देख उनका लोक संस्कृति तथा लोग मूल्यों के प्रति लगाव देखते रहा था।

जिला स्तर हेतु प्रतिभागियों को अपनी विधा की वीडियो रिकॉर्डिंग ही भेजनी थी, जिसके चलते बेहतरीन प्रतिभागिता हर जिले से प्राप्त हुई। फिर प्रारंभ हुई राज्यस्तरीय प्रतियोगिता जिससे कला उत्सव के प्रारूप की तरह जिला मुख्यालयों से लाइव प्रस्तुत करना था। अब तैयारियाँ तथा रियाज़ चरम पर था। सभी प्रतिभागी अपनी प्रस्तुति में विशेषज्ञों की राय शामिल कर रहे थे। कहीं वादन-संगत हेतु सहयोगियों को ढूँढ़ा जा रहा था तो कहीं अच्छी प्रभावी धोती व पगड़ी बांधने वाले साथियों की तलाश जारी थी। कहीं अपनी प्रस्तुतियों की बार-बार रिकॉर्डिंग करके उनकी कमियों को दूर किया जा रहा था। साथ में प्रतियोगी माहौल की प्राथमिकता दी सभी के जेहन में थी।

प्रतिभागी शिक्षकों ने पूरे समर्पण के साथ रंगोत्सव को जीया है। शिक्षा विभाग के प्रेरक नवाचारी प्रकल्प से बेहद खुश नजर आए। रंगोत्सव की सभी नौ प्रतियोगिताओं में विजेता रहे मुख्याध्यापक सत्यपाल सिंह यादव ने पाँच प्रतियोगिताओं में राज्य स्तर पर भी अपनी प्रस्तुति देकर नये आयाम रचे।

स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद्, पंचकूला से इस रंगोत्सव के संयोजन एवं संचालन में जुटे कला मर्मज्ञ प्रभारी दिबाकर दास का मानना है कि रंगोत्सव शिक्षकों की महज एक प्रतियोगिता नहीं है, यह एक शैक्षणिक-सांस्कृतिक आंदोलन है, जिसकी केंद्रीय भूमिका में शिक्षक को इसलिए रखा गया है कि वह कला,संस्कृति एवं शिक्षा को विद्यालय एवं समाज में संजीदगी से सहेज सकता है। भविष्य में इस प्रारूप में कुछ अतिरिक्त जोड़ा जाएगा। नई प्रतियोगिताएँ शामिल करना, नॉन-टीचिंग स्टाफ को जोड़ना, नियमावली में संशोधन करना आदि प्रस्तावित है। रंगोत्सव शिक्षा विभाग का वार्षिक फीचर बनाया जाएगा। राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं के दौरान भारत सरकार के केंद्रीय मंत्रालय से टेक्निकल सपोर्ट ग्रुप के सीनियर कंसलटेंट तथा प्रख्यात संस्कृति मर्मज्ञ गिरिजा शंकर ने भी इस रंगोत्सव में हरियाणा के शिक्षकों के कला एवं संस्कृति के प्रति जुनून को देशभर के लिए प्रेरक पहल व मिसाल बताया।

प्राध्यापक रसायनशास्त्र
राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
खोरी, जिला-रेवाड़ी, हरियाणा

प्रतिभा को निखारने का सशक्त माध्यम हैं सांस्कृतिक गतिविधियाँ

राधेश्याम भारतीय

विद्यालय वह उर्वर भूमि है जहाँ विद्यार्थियों की प्रतिभा फलती-फूलती है। इसके इस फलने-फूलने में जहाँ पुस्तकीय ज्ञान, खेल-कूद, साहसिक गतिविधियाँ महत्व रखती हैं, वहीं सांस्कृतिक गतिविधियों को भी कम नहीं आँका जा सकता बल्कि उनका महत्त्व अन्य गतिविधियों से इक्कीस ही होता है। सांस्कृतिक गतिविधियों से जुड़कर विद्यार्थी अपने वर्तमान और भविष्य दोनों को उज्ज्वल बना सकता है, अपने सपनों में रंग भर सकता है, अपने परों में जान डाल सकता है। वैसे भी कला मात्र मनोरंजन का साधन नहीं है बल्कि कला में आनंद है। आनंद का संबंध ह्रदय से है। कला के संबंध में कृष्ण गोपाल लिखते हैं- 'कला में ह्रदय है, इसके अंदर भावनाएँ हैं, संवेदनाएँ हैं। कला अपूर्णता को पूर्ण कर देती है। एक रिक्तता को भर देती है। कला अशांत मन को शांति की अनुभूति करवा देती है।'

आज जो भी नेता, अभिनेता, एंकर, गीतकार, संगीतकार, चित्रकार, नाटककार, प्रसिद्धि के राजसिंहासन पर विराजमान हैं कहीं न कहीं उन्होंने सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेकर ही अपनी प्रतिभा को निखारने का प्रयास किया होगा। वे विद्यार्थी जीवन से ही एक सपना लेकर चले होंगे और उसी सपने को साकार करने के लिए की होगी साधना। उसी साधना ने पहनाया होगा उन्हें सफलता का मुकुट।

अतः विद्यार्थियों को अपनी छिपी प्रतिभा का प्रदर्शन करने के लिए विद्यालयी स्तर से ही अवसर प्रदान किए जाते रहते हैं। स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, बालदिवस के अतिरिक्त भी विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम करवाकर अधिक से अधिक विद्यार्थियों को मंच प्रदान किया जाता है ताकि अधिक से अधिक विद्यार्थी अपनी कला को प्रदर्शित कर सकें। विद्यालयों में चल रही एनसीसी, एनएसएस एवं स्काउटिंग आदि गतिविधियाँ भी विद्यार्थियों को सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने को प्रेरित करती हैं। विद्यालयों में शनिवार को शुरू किए गए 'जॉयफुल सैटरडे' का उद्देश्य भी विद्यार्थियों को सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से प्रतिभा को गढ़ना और ज्ञान देना रहा था। जो विद्यार्थी सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेते हैं उन्हें नेशनल कैम्पों में जाने के अवसर अधिक मिलते हैं। जहाँ उन्हें बाहर की दुनिया देखने का अवसर तो मिलता ही है, वहीं उस दुनिया से बहुत कुछ सीखने को भी मिलता है।

सांस्कृतिक शब्द संस्कृति में इक प्रत्यय के योग से बना है। संस्कृति जिसमें 'सम्' का अर्थ है समान एवं श्रेष्ठ तथा 'कृति' का अर्थ है कार्य, कर्म या आचरण अतः शुद्ध एवं श्रेष्ठ आचरण का नाम 'संस्कृति' है। संस्कृति से संबद्ध शब्द 'संस्कार' का अर्थ -शुद्धि की प्रक्रिया' 'शुद्धि' का अर्थ पवित्रता से नहीं बल्कि सामाजिकता' से है। इसका अर्थ यह हुआ कि व्यक्ति को एक सामाजिक प्राणी बनाने में जिन तत्वों का योगदान होता है इन सभी तत्वों के प्रबंधन में 'संस्कृति' है। इसके अन्तर्गत हम राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक चेतना, नारी सशक्तिकरण, धार्मिकता, परम्पराएँ, लोकजीवन एवं लोकविश्वास से जुड़ पाते हैं।

जब कोई विद्यार्थी अपने ओजस्वी भाषण से वीरों की यशगाथा का उल्लेख करता है तो विद्यार्थी जहाँ वीरों के

पराक्रम से अवगत होते हैं वहीं उन जैसा बनने की प्रेरणा भी पाते हैं। जब विद्यार्थी नाटक के माध्यम से नारी की चेतना के बदलते स्वरूप को प्रस्तुत कर रह होते हैं और हर क्षेत्र में लहराते उनके परचम का मंचन कर रहे होते हैं तो अनायास छात्राओं के जेहन में कुछ विशेष करने का संकल्प जन्म लेने लगता है। साहस के बल पर संकीर्णताओं की बेड़ियों को तोड़कर समाज में होने वाले परिवर्तनों की तस्वीर छात्रों के जेहन में सजीव रूप धारण करने लगती है। इसके साथ विद्यार्थी नाटक के माध्यम से सामाजिक विडम्बनाओं, विसंगतियों, रूढ़िवादी परम्पराओं पर भी प्रहार करते हैं। समाज से अशिक्षा, नशा, दहेजप्रथा, कन्याभ्रूण हत्या, अंधविश्वास, छुआछूत, जैसी समस्याएँ यदि दूर हुई हैं तो उनमें सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने अपनी विशेष भूमिका निभाई है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिला है। इस तरह के कार्यक्रम जहाँ विचारों को जन्म देते हैं वहीं विद्यार्थियों को उनके दायित्व का बोध भी करवाते हैं। वे बोध करवाते हैं कि आप ईश्वर की सर्वोत्तम कृति हैं। इसलिए आप ठान ले तो असंभव को संभव में बदल सकते हैं। सांस्कृतिक गतिविधियाँ एक तरह की पाठशाला ही है, जहाँ मूल्यों को तवज्जो दी जाती है। सांस्कृतिक गतिविधियाँ आईना है देश का, प्रदेश का।

जब कोई विद्यार्थी लोकगीत प्रस्तुत कर रहा होता तो वह उस प्रदेश की भाषा, रहन-सहन, व्यवहार, जीवन-शैली से परिचित करवा रहा होता है। यदि छात्रों का समूह लोकगीत में हरियाणा प्रदेश के युवाओं का सेना में जाने का जिक्र कर रहे होते हैं तो यह बात स्वयं सिद्ध हो जाती है कि हरियाणा प्रदेश को वीरप्रसूता भूमि होने का गौरव वैसे ही प्राप्त नहीं हुआ है। जब किसी नाटक में मजदूर का शोषण होता है तो उस मज़दूर के प्रति अनायास ही मन में करुणा के भाव उभरने लगते हैं और अन्याय के प्रति लड़ने का जोश मन में पैदा होने लगता है।

इनके अतिरिक्त सांस्कृतिक कार्यक्रमों में समूह में काम करने की भावना पैदा होती है, भाषा में सुधार होता है, वैचारिक क्षमता बढ़ती है, पात्रों के दुख-दर्द की अनुभूति से संवेदनशीलता बढ़ती है। इसमें कोई दोराय नहीं कि बच्चों पर देखे एवं सुने हुए का असर दूरगामी होता है।

सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन केवल स्कूली स्तर पर ही होकर नहीं रह जाता बल्कि प्रतिभागी आगे चलकर खंड स्तर, फिर जिला स्तर और राज्य स्तर से होते हुए राष्ट्रीय स्तर तक अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हैं। ये प्रतियोगिताएँ आयुवर्ग के अनुसार होती हैं। हरियाणा में छठी से आठवीं तक 'टेलैंट सर्च' और नौवीं से बारहवीं तक 'कला उत्सव' के नाम से कार्यक्रम आयोजित होते हैं। देश के सभी प्रदेशों में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर जब सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हो रहा होता है तो विभिन्न प्रदेशों की संस्कृति को समझने का अवसर मिलता है। देश की अनेकता

में एकता के दर्शन होते हैं। खास बात यह होती है कि कार्यक्रम में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाओं का ज्ञान न होने पर भी श्रोता मूल उद्देश्य तक पहुँच ही जाते हैं। उदाहरण के रूप में यदि भिन्न-भिन्न प्रदेशों से आए बाल कलाकार 'सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्तान हमारा, हम बुलबुले हैं इसकी ये गुलस्तां हमारा।' की प्रस्तुति दे रहे होते हैं तो गीत के बोल की भाषा समझ न आने पर उस गीत में देशप्रेम की बहती भावधारा को आत्मसात कर ही लेते हैं। इसलिए सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से भाषा, रंग, क्षेत्रीयता, आदि गौण हो जाते हैं और अनेकता में एकता की अनूठी छटा प्राथमिक बन हर मन पर छा जाती है। और फिर यह महावाक्य याद आने लगता है-

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौर-ए-जमां हमारा।

शिक्षक वर्ग की यह प्राथमिकता होनी चाहिए कि वे सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अधिक से अधिक बच्चों को उसका हिस्सा बनाएँ ताकि वे कला की बारीकियों को समझ सकें और कला के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त कर सकें क्योंकि कला चरित्र का निर्माण करती है। मानवीय मूल्यों के आविर्भाव में सहायक सिद्ध होती है, कल्पना शक्ति को बढावा देती है, स्वयं से बाहर निकलकर अन्य के साथ एकाकार होना सिखाती है। उनके दुख दर्द समझने की शक्ति पैदा करती हैं। कला मृत में भी प्राण फूँक देती है। सत्य की खोज करवा देती है। उन्हीं मूल्यों के सहारे विद्यार्थी आदर्श की स्थापना कर सकते हैं। अतः कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों की बहुमुखी प्रतिभा को निखारने में सांस्कृतिक गतिविधियों का अहं योगदान है।

मौलिक मुख्याध्यापक
राजकीय उच्च विद्यालय
नगला मेघा, करनाल,हरियाणा

कला भाव-संप्रेषण का सशक्त माध्यमः विजय कुमार यादव

विभाग द्वारा कला शिक्षकों के लिए लगाई पाँच दिवसीय कार्यशाला

सुभाष शर्मा

कला भाव-संप्रेषण का सशक्त माध्यम है। कला ही है जिसमें मानव मन में संवेदनाएँ उभारने, प्रवृत्तियों को ढालने तथा चिंतन को मोड़ने, अभिरुचि को दिशा देने की अद्भुत क्षमता है। मनोरंजन, सौन्दर्य, प्रवाह, उल्लास न जाने कितने तत्वों से यह भरपूर है, इसमें सम्मोहित करने की शक्ति है। कलाकार नित्य कुछ न कुछ सीखता ही रहता है, इसके लिए कार्यशालाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उक्त विचार मौलिक शिक्षा विभाग के संयुक्त निदेशक विजय कुमार यादव ने विभाग द्वारा सैक्टर-26 पंचकूला के राजकीय विद्यालय में विभाग द्वारा लगाई गई राज्य स्तरीय कला कार्यशाला के समापन के अवसर पर अपने संदेश में व्यक्त किए। उन्होंने इस अवसर पर लगाई गई प्रदर्शनी का उद्घाटन भी किया। इस प्रदर्शनी में वे तमाम

कलाकृतियाँ प्रदर्शित की गईं जो उक्त कार्यशाला के दौरान प्रशिक्षकों व प्रतिभागियों के द्वारा बनाई गईं। कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग हरियाणा के प्रतिनिधि भी इस अवसर पर शामिल हुए। वहीं इस पाँच दिवसीय कार्यशाला के दौरान अपनी प्रतिभा व अनुभव के द्वारा प्रतिभागी कलाकारों का मार्गदर्शन करने वाले फाईन आर्ट्स कॉलेज चंडीगढ़ से सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉ. रवीन्द्र कुमार शर्मा भी उपस्थित रहे। मुख्य-अतिथि ने सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए। पाँचवें दिन बड़ी संख्या में स्थानीय अध्यापक व प्रधानाचार्य इस प्रदर्शनी को देखने

के लिए आए।

पाँच दिवसीय राज्य स्तरीय पीजीटी फाइन आर्ट्स कार्यशाला का आयोजन कला अध्यापकों की कला को निखारने व उन्हें कुछ नया सिखाने के उद्देश्य से हरियाणा माध्यमिक शिक्षा निदेशालय के दिशा-निर्देश पर पंचकूला के सेक्टर 26 स्थित राजकीय आदर्श संस्कृति मॉडल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में किया गया। कार्यशाला में प्रदेश के आदर्श संस्कृति मॉडल के 37 अध्यापकों ने भाग लिया।

कार्यशाला के पहले दिन इसका उद्घाटन पंचकूला की जिला शिक्षा अधिकारी श्रीमती उर्मिल देवी ने किया। इस अवसर पर उप जिला शिक्षा अधिकारी संध्या चिकारा विशेष तौर पर उपस्थित रही। इस अवसर पर जिला शिक्षा अधिकारी पंचकूला श्रीमती उर्मिल देवी ने कहा कि अध्यापक इस कार्यशाला में जो भी अनुभव प्राप्त करेंगे, उन्हें पूरा भरोसा है कि वह अपने अनुभवों से अपने शिष्यों का मार्गदर्शन करेंगे, बल्कि उन्हें इस कला में पारंगत भी करेंगे।

कार्यशाला के दूसरे दिन सभी प्रतिभागियों ने कला की कुछ ओर नई बारीकियाँ सीखीं। ग्राफिक्स विभाग कुरुक्षेत्र के प्रोफेसर राकेश बानी ने सभी प्रतिभागियों को वुडेन कार्विंग करके दिखाई व बताया कि लकड़ी की नक्काशी की कला को इन अध्यापकों द्वारा विद्यालय स्तर तक पहुँचाने से भविष्य में कई बच्चे स्वरोज़गार करने में भी सक्षम हो पाएँगे। वहीं केंद्रीय विश्वविद्यालय, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश से आए डॉ. वेद प्रकाश पालीवाल ने सभी प्रतिभागियों को ऐक्रेलिक पेंटिंग, सॉफ्ट पोस्टल पेंटिंग, स्केचिंग ऑफ ह्यूमन फिगर के बारे में विस्तृत जानकारी दी तथा इन सभी कलाओं का प्रशिक्षण भी दिया।

कार्यशाला के तीसरे दिन डॉ. रवींद्र शर्मा ने फ्री हैंड ड्राइंग जिसमें ऑयल पेस्टल व सॉफ्ट पेस्टल की नई तकनीक सिखाई गई। डॉ. रवींदर शर्मा ने अपने अनुभवों को साँझा करते हुए सभी अध्यापकों को बताया कि कला सीखने वाले विद्यार्थी के साथ कला अध्यापक की भी साधना होती है। बठिंडा से फ्रीलांसर आर्टिस्ट गुरप्रीत ने पोर्ट्रेट आर्ट व लाइव स्केचिंग का प्रशिक्षण दिया।

अपने अनुभव साँझा करते हुए राजकीय आदर्श संस्कृति मॉडल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सैक्टर-26 के पीजीटी फाइन आर्ट्स डॉ. अमित सिंह व टीजीटी ड्राइंग श्रीमती दीपा ने बताया कि इस कार्यशाला के दौरान उन्हें विभिन्न कलाओं को सीखने का अवसर मिला है। इस कार्यशाला में भी उन सभी सीखी हुई बातों की भी रिवीजन हो गई है, जो कभी कॉलेज में सीखी थी।

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सिविल लाइन गुरुग्राम में फाईन आर्ट्स के प्राध्यापक अश्विनी कुमार ने बताया कि कई प्रकार की विधाओं को सीखने का मौका कार्यशाला के दौरान मिला।

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, हिसार में फाईन आर्ट्स के प्राध्यापक डॉ राजेश जांगडा ने कहा कि यहाँ पर देश के विख्यात कलाकारों को अध्यापकों के मार्गदर्शन के लिए आए थे। इस कार्यशाला का उद्देश्य है कि अध्यापक कम से कम संसाधनों का उपयोग करके अच्छी कला का प्रदर्शन कर सके। विभाग द्वारा करवाई गई इस कार्यशाला की जितनी सराहना की जा सके, कम है।

पूनम अहलावत, प्रोग्राम ऑफिसर, एकेडमिक सेल, जिनके मार्गदर्शन में यह कार्यशाला आयोजित की गई, ने बताया कि पहले आयोजित की गई कार्यशाला के बेहतरीन परिणाम आये थे, इसीलिए इसे दोबारा करवाया गया है। कार्यशाला से जो कुछ इन अध्यापकों ने सीखा है, उससे विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के ज्ञान में काफी वृद्धि होगी।

कार्यशाला के समापन समारोह में पंचकूला के पिंजौर खंड के खंड शिक्षा अधिकारी डॉ. पवन कुमार गुप्ता ने कहा कि ये पाँच दिन इन सभी प्रतिभागियों के आने वाले जीवन में बहुत बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान रखेंगे। जो अनुभव इन सभी प्रतिभागियों ने यहाँ प्राप्त किए हैं, उनका लाभ इनके विद्यार्थी प्राप्त करेंगे। समापन समारोह में राजकीय आदर्श संस्कृति मॉडल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बतौड़ के प्रिंसिपल जितेन्द्र शर्मा, राजकीय आदर्श संस्कृति मॉडल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, रायपुररानी की प्रिंसिपल सरोज शर्मा उपस्थित रहे। राजकीय आदर्श संस्कृति मॉडल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सेक्टर 26 विद्यालय की प्रधानाचार्य संजू शर्मा ने हरियाणा शिक्षा विभाग द्वारा संस्कृति स्कूलों में पहली बार करवाई गई इस कार्यशाला के लिए विभाग का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि इस कार्यशाला में विभाग द्वारा विद्यालय में जिस प्रकार कलाओं का प्रदर्शन किया गया,

उसने विद्यालय का भी पूर्ण नवीनीकरण कर दिया है। इस कार्यशाला को सफल बनाने में राजकीय आदर्श संस्कृति मॉडल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सैक्टर-26 की वाइस प्रिंसिपल श्रीमती नीलम शर्मा, पीजीटी फाइन आर्ट्स डॉ. अमित सिंह, टीजीटी ड्राइंग श्रीमती दीपा, पीजीटी, संस्कृत सुशील पराशर, व टीजीटी संस्कृत संगीता बेनीवाल तथा कार्यशाला की प्रबंधन समिति के सदस्य राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय हंगोला में अर्थशास्त्र के प्रवक्ता रमेश कुमार व राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, लल्हाड़ी कलाँ, यमुनानगर के अंग्रेजी के प्रवक्ता सुभाष शर्मा ने कार्यशाला को सफल बनाने के लिए सहयोग किया। कार्यशाला में मास्टर ट्रेनर पंचकूला के भीम सिंह, हिसार से राजेश, गुरुग्राम से अश्विनी ने इस कार्यशाला के दौरान अपनी कला-कृतियों का प्रदर्शन किया।

अंग्रेजी प्रवक्ता,
रावमा विद्यालय लल्हाड़ी कलाँ
जिला- यमुनानगर, हरियाणा

नये प्रतिमान गढ़ता करनाल का राजकीय उच्च विद्यालय नगला मेघा

जब मन में कुछ नया कर गुजरने का संकल्प लिया जाए, तो बाधाएँ अपनी हठधर्मिता छोड़कर दूर खड़ी हो जाया करती हैं, और कायनात भी साथ देने लगती है। ऐसा ही कुछ हुआ राजकीय उच्च विद्यालय नगला मेघा करनाल में। जहाँ के स्टाफ सदस्यों ने हर क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किए।

आज विद्यालय की जो इमारत मुँह बोलती प्रतीत हो रही है; वहाँ खड़े पेड़ खुशी से झूमते नजर आ रहे हैं; क्यारियों में खिले फूल मुस्कुराते से जान पड़ते हैं और हर बच्चों के चेहरे पर आशा की किरणें उनके सुखद,एवं मंगलमय भविष्य का अहसास करवा रही है। यह सब भगीरथ प्रयास स्टाफ-सदस्यों के सहयोग से संभव हो पाया है।

यह सफर टेढ़ी-मेढ़ी राहों से कुछ यूँ गुजरा कि हर बाधा बड़ी देर तक अपने पाँव न जमा पाई। जिस प्रकार पानी के बहाव के सामने बड़ी-बड़ी चट्टानों को रास्ता छोड़ देना पड़ता है उसी तरह यहाँ के कर्मठ अध्यापकों के हौसलों के सामने समस्याएँ राह छोड़कर एक कोने में दुबक बैठ गई।

सफर शुरू हुआ सितम्बर 2019 से। विद्यालय में लगभग आधे से ज्यादा स्टाफ ट्रांसफर के कारण दूसरे विद्यालयों से यहाँ पहुँचा। फिर वही हुआ जो अक्सर होता है। कहते हैं जब हम किसी के घर जाते हैं तो हमारी नज़र वहाँ की अच्छाइयों की बजाय कमियों पर पहले जाती है। विद्यालय में अच्छाइयाँ भी बहुत थीं। अनुशासित बच्चे थे, परिश्रमी स्टाफ, बच्चों को दोपहर में मिलने वाला स्वादिष्ट भोजन। तो एक विद्यालय को और क्या चाहिए। पर नहीं, विद्या ग्रहण करने के लिए सुन्दर इमारत, सुन्दर प्रांगण और अन्य मूलभूत सुविधाएँ भी आवश्यक हैं। विद्यालय का प्रांगण धूल-धूसरित था, पानी की टंकियाँ विद्यालय के बीचो बीच खड़ी मानो उसकी शोभा को चिढ़ा रही थीं। पानी की उचित निकासी न होने के कारण दिन में भी मच्छरों का डर अलग से बना रहता था। इनके अतिरिक्त जो सुविधाएँ नहीं थीं, उन्हें मुहैया करवाने के लिए तत्कालीन

डीडीओ उर्वशी जी की अध्यक्षता में एक मीटिंग रखी गई। और विद्यालय की इमारत पर रंग-रोगन, पानी की टंकियों को बीच से हटाकर दूसरी जगह स्थापित करने की योजना बनाई गई। मैडम ने कहा कि विद्यालय के पास ऐसा कोई फंड नहीं है जिससे ये सब कार्य किये जाएँ। कई साथी कहने लगे कि हम समाज के बीच जायेंगे और चंदा इकट्ठा करके इस काम को अंजाम देंगे। तो इसके लिए एक कमेटी गठित की गई। जिसमें डॉ सुभाष(हिंदी प्राध्यापक), डॉ.राधेश्याम (मौलिक मुख्याध्यापक), विनोद कुमार (इतिहास प्राध्यापक), यशदीप (अंग्रेजी प्राध्यापक), मान सिंह (संस्कृत अध्यापक) महेन्द्र पाल

(सामाजिक अध्ययन) अमित (गणित अध्यापक) रामेश्वर (अंग्रेजी अध्यापक) एवं विकास शामिल हुए।

सबसे पहले तो ग्राम पंचायत से मूलभूत संसाधनों की पूर्ति के लिए सरपंच साहिबा सुमन देवी को अवगत करवाया गया। उन्होंने वह सब कार्य करवाने का आश्वासन दिया। हमें लगा कि आगाज अच्छा हुआ है तो अंजाम भी अच्छा ही रहेगा। पर लगभग एक महीने बीत जाने पर भी काम शुरू न होने पर निराशा हुई। हमने निराशा को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। कमेटी ने पुनः विचार किया कि समाज के बीच जाया जाए और सबसे पहले विद्यालय की जर्जर इमारत जो आलस्य में डूबी-सी नज़र आती थी, उसके कायाकल्प करने की सोची। कहीं से पता चला था कि करनाल के घंटाघर चौंक पर 'भारत पेंट्स' के नाम एक दुकान है जिसका मालिक स्कूलों की इमारतों पर पेंट करवाने के लिए फ्री में पेंट देता है। उसके उस विशाल हृदय से प्रभावित हो हमने भी वहाँ जाने का फैसला किया।

कमेटी के दो सदस्य वहाँ पहुँचे और विद्यालय की इमारत का चित्र दिखाया। चित्र देखते ही उन्होंने कहा, "आप हमें कुछ समय दीजिए।" हमें एक अजीब-सा डर सताने लगा कि कहीं यहाँ से भी निराशा ही हाथ न लगे। और फिर दुःखी मन से वापस आ गए। दस दिन बाद साथी कहने लगे कि हमें एक बार फिर जाना चाहिए और जब हम दोबारा गए तो उसने कहा कि आप पेंट करवाने वालों से वहाँ लगने वाले पेंट्स लिखवाकर हमें दे जाएँ हम कोशिश करेंगे। यह सुन हमारे शरीर में खुशी की लहर दौड़ गई। हमें ये पहली सफलता मिलती नज़र आ रही थी।

हम अगले दिन विद्यालय आए और एस्टीमैट बनवाकर ले गए और फिर अगले सप्ताह उन्होंने पूरी बिल्डिंग पर रंग-रोगन करवाने के लिए पेंट फ्री में दे दिया। ये रंग जैसे हमारी उम्मीदों का रंग था, हमारे विश्वास का रंग था, हमारे प्रयासों का रंग था जो अब अपनी चमक बिखेरने वाला था और बच्चों के चेहरों पर खुशियाँ लाने वाला था। जैसे ही रंग रोगन विद्यालय में पहुँचा तो इसी बीच सरपंच साहिबा के पति श्री गुरनाम आए और कहने लगे, मास्टर जी हम पंचायत की ओर से रंग-रोगन करवाने का खर्च वहन करेंगे। और साथ में प्रांगण में इंटर लॉकिंग टाइलें भी लगवा देंगे। यह सुनकर मानो पूरा स्टाफ बल्लियों उछलने लगा था। जैसे किसी घर में विवाह की तैयारियाँ होती है वैसी ही तैयारी नगला मेघा स्कूल में होने लगी। कुछ कर्मठ साथियों ने इस तैयारी को संभाला तो बाकी ने पूर्ण सहयोग करते हुए उनकी कक्षाओं में पढ़ाई पर कोई आँच न आने दी।

अभी टाइलों का काम शुरू हुआ भी नहीं था कि इसी बीच विद्यालय में साठ हजार की ग्रांट आ गई। जब ऊपर वाला देता है तो छप्पर फाड़कर देता है। सभी स्टाफ सदस्यों ने मिलकर योजना बनाई कि इस राशि को किस तरह खर्च किया जाए।

पुरानी पड़ चुकी खिड़कियों एवं रोशनदान की जालियाँ बदलवाने, बीच राह बनी पानी की टंकियाँ को तोड़कर एक साइड में दीवार से साथ बनवाई जाने की योजना बनी। ये सब कार्य एक साथ शुरू कर दिए। बच्चे यह देख खुश होने लगे।

टंकी का काम अभी अधूरा ही था कि पैसों की कमी खलने लगी। विचार हुआ अब क्या किया जाए और फिर से समाज के बीच जाने की तैयारी हुई और कई साथी मिलकर एक मिल में पहुँचे और उन्होंने हमारी बातें सुनकर कहा, ठीक है इस पुण्य-काम में हम आपकी सहायता करेंगे। इस तरह टंकी का निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ। जहाँ टंकियों को उचित स्थान मिला, वहीं बच्चों को स्वच्छ पानी और मिला मच्छरों से छुटकारा।

फिर विद्यालय में टाइलें बिछने लगीं। अभी टाइलें पूरी तरह बिछी भी नहीं थी कि तभी ग्राम पंचायत की ओर से जल संरक्षण हेतु खुदाई के लिए मशीन पहुँच गई। वैसे भी विद्यालय सड़क से निचाई पर होने के कारण बरसात में सारा पानी विद्यालय में खड़ा हो जाता था। यह एक बड़ी समस्या थी और अब उससे भी छुटकारा मिलने

वाला था और प्रकृति की अनमोल धरोहर जल का भी संरक्षण होने वाला था। टाइलें बिछने के बाद विद्यालय का प्रांगण किसी बच्चे की हँसी-सा खिलखिलाता नजर आने लगा। बच्चों को धूल मिट्टी से छुटकारा मिल गया। वहीं स्वीपर (ईशमा) भी निश्चित होकर साफ-सफाई करने लगा।

स्वतंत्रता दिवस पर सरपंच साहिबा को आमंत्रित किया गया। वे आए और आश्वासन दिया कि ग्राम पंचायत विद्यालय के सर्वांगीण विकास में हमेशा साथ रहेगी। बस, आप विद्यार्थियों को मन लगाकर पढ़ाए। विद्यालय का कर्मठ एवं परिश्रमी स्टाफ पहले से ही अतिरिक्त कक्षाएँ लेकर बच्चों को अधिक से अधिक ज्ञानार्जन में प्रयासरत था। कक्षा छठी से आठवीं तक बच्चों को सक्षम की परीक्षा-यज्ञ में शिक्षक महेन्द्र पाल, अमित, नीरज, रीटा, मीनाक्षी, गीता, ममता, रामेश्वर, मानसिंह ने अपने परिश्रम की आहुति डाली कि सभी बच्चे सक्षम की परीक्षा में पास हो गए। मौलिक मुख्याध्यापक राधेश्याम भी अतिरिक्त कक्षाएँ लेकर हिंदी विषय में सहयोग कर रहे थे।

इसी दौरान विद्यालय में दिव्यांग बच्चों के लिए एक शौचालय बनवाने के लिए 80,500 की ग्रांट आई। उस ग्रांट से बच्चों के लिए एक बहुत ही सुन्दर शौचालय तैयार करवाया गया।

वैसे तो मिड-डे मील रसोई के अंदर ही तैयार होता है परन्तु कभी कभी चावल बीनने का काम बाहर बैठकर करना पड़ता है उसके लिए रसोई के बाहर एक शैड बनवाया गया। अब न ही बरसात में परेशानी और न ही पक्षियों द्वारा बीट आदि का डर। अब सर्दी आए, गर्मी आए और कोई परेशानी नहीं।

विद्यालय में इक्को क्लब की ग्रांट से गमले मँगवाए गए। उनमें हरे-भरे पौधे लगवाकर उनको व्यवस्थित ढंग से रखा गया। जिससे विद्यालय की शोभा में चार चाँद लग गए। गमलों में लगे पौधों की देखभाल बाबू राम कर रहा था अब माली की पोस्ट पर रोहताश आ गया और उसने अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाई। विद्यालय में हरा-भरा वातावरण बन गया।

अब तक दसवीं कक्षा का रिजल्ट आ चुका था। यह रिजल्ट पिछले वर्ष के रिजल्ट से बेहतर था। इसकी चर्चा पूरे गाँव में हुई। गणित प्राध्यापिका मुकेश जी,के पढ़ाए गए बच्चों में से एक बच्चे ने 100 में से 100 अंक प्राप्त किए। अंग्रेजी जैसे कठिन विषय में विद्यार्थियों ने बेहतर परिणाम दिया। उर्वशी, डॉ. सुभाष, विनोद, मान सिंह, ममता, इन्द्रजीत, और ज्योति ने अपनी मेहनत को बेहतर परीक्षा परिणाम में बदलकर दिखाया। लिपिक राजेन्द्र गुलाटी मौन साधक की तरह अपने काम को अंजाम देता रहता।

सितम्बर 2020 में मुख्याध्यापिका विनोद कुमारी ने का पद ग्रहण किया और पद ग्रहण करते ही यही कहा कि विद्यालय के विकास कार्य रुकने नहीं चाहिए। आप पहले की तरह काम करते रहे। आपको हर कदम पर मेरा सहयोग मिलेगा। बस, उनका इतना कहना ही जैसे साथियों के हौसलों को हवा दे गया।

अगला कदम विद्यालय के ऑफिस को सुधारने पर विचार हुआ क्योंकि उसका फर्श कई जगह से उखड़ चुका था। पैसा हाथ में था नहीं लेकिन काम करना था। सभी सदस्यों के सहयोग से ऑफिस में तो टाईलें तो बिछवाई ही, साथ में रसोईघर में भी टाइलें बिछवाई गईं क्योंकि वहाँ चूहों ने अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया था। और उनके राजसिंहासन को हिलाने के लिए वहाँ मजबूत टाइलों का बिछाया जाना अनिवार्य था। नहीं तो उनका उत्पात मिड-डे मील इंचार्ज मानसिंह के लिए सिरदर्द बनता जा रहा था।

उसके बाद 70 हजार की ग्रांट आई। जिससे विद्यालय का मेन गेट सुन्दर बनाया जाना था। दीवारों पर लिखवाए जाने थे स्लोगन। कहते है विद्यालय की दीवारें भी पढ़ाती हैं। और जब बच्चे विद्यालय आयेंगे तो उन स्लोगन को पढ़कर उनका असर उनके मस्तिष्क पर अवश्य पड़ेगा और उन्हें जीवन में सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देगा।

फिर जिला परिषद् करनाल की ओर विद्यालय में शिक्षण सामग्री के रूप में जो पेंटिंग की गई उससे दुगुना लाभ हुआ।एक तो उन्हें दृश्य शिक्षण सामग्री मिल गई जिसे देखकर आसानी में समझा जाने लगा, दूसरा विद्यालय परिसर मनभावन बन गया। इसका असर कोरोना काल के बाद दिखाई दिया, जब विद्यालय में कक्षाएँ लगने लगी तो लगभग सभी विद्यार्थी स्कूल पहुँचे। अब लगातार छात्र विद्यालय पहुँच रहे हैं और सभी अध्यापक जोर-शोर से बच्चों की पढ़ाई के साथ-साथ उनके सर्वांगीण विकास में तत्परता से जुटे हैं। अनुशासन बनाए रखना, बच्चों के खेलकूद करवाना गगनदीप जी (शारीरिक शिक्षक) ने अपना लक्ष्य बना लिया था।

इसी आशा के साथ कि बच्चों के सर्वांगीण विकास में यह सफर निरन्तर जारी रहेगा और नये विद्यालय नये प्रतिमान स्थापित करेगा।

डॉ.राधेश्याम
मौलिक मुख्याध्यापक
राजकीय उच्च विद्यालय
नगला मेघा, करनाल, हरियाणा

स्काउट्स एंड गाइड्स के पर्याय हैं अमित कुमार

रेवाड़ी जिले की स्काउट्स एंड गाइड्स की गतिविधियों को राज्य स्तर पर विशिष्ट पहचान दिलाने में जिला संगठन आयुक्त (कब) अमित कुमार का कुशल संयोजन एवं प्रबंधन छाप एवं प्रभाव छोड़ रहा है, जिसके चलते वे स्काउट्स एंड गाइड्स के पर्याय बन कर उभरे हैं।

वर्ष 2012 में शिक्षा विभाग द्वारा गुरुग्राम में आयोजित एक शिविर में पहली बार रक्तदान करने से मिली अनूठी आत्मसंतुष्टि तथा फिर विभाग द्वारा स्काउट्स एंड गाइड्स की जिम्मेवारी ने अमित को इन गतिविधियों का संवाहक बना दिया, यही कारण है कि अब तक वे न केवल 15 रक्तदान शिविरों का सफल संचालन व संयोजन कर चुके हैं अपितु सभी शिविरों में रक्तदान करके अपने शिक्षक साथियों को प्रेरित और प्रोत्साहित भी करते रहे हैं।

वर्ष 2014 में उनके संयोजन में जहाँ रेवाड़ी के 24 प्राथमिक शिक्षकों ने कब-बुलबुल का प्रशिक्षण प्राप्त किया वहीं 2015 में यह संख्या बढ़कर 31 कब तथा 24 बुलबुल की हो गई जो जिले में सर्वाधिक संख्या रही तथा ओवरआल ट्रॉफी भी उन्हें प्राप्त हुई। जिला संगठन आयुक्त कब के तौर पर उनके मार्गदर्शन में एक ओर जहाँ 682 छात्र-छात्राओं ने संबंधित जिला स्तरीय प्रशिक्षण प्राप्त किया वहीं वर्ष 2018 में पहली बार जिले के 55 प्रतिनिधियों ने कब मास्टर बेसिक कैंप में प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा सौ जेबीटी प्रशिक्षुओं ने पहले रेवाड़ी डाइट तथा फिर राज्य स्तरीय प्रशिक्षण तारा देवी में उनके संयोजन में प्राप्त कर नए आयाम स्थापित किए।

जिला संगठन आयुक्त कब के मार्गदर्शन में अब तक 15 रक्तदान शिविरों का आयोजन किया जा चुका है जिसमें 984 यूनिट खून एकत्रित कर एक नया रिकॉर्ड बनाया गया है। उनके मार्गदर्शन में 102 टीचर संबंधित प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं तथा विभिन्न लोकसभा तथा विधानसभा चुनाव में सभी बूथों पर दो-दो स्काउट वॉलिंटियर्स अपनी सेवाएँ देते रहे हैं।

गत वर्ष कोरोना की शुरुआत में उन्हें उपायुक्त कार्यालय में अनेक गतिविधियों के संयोजन में केंद्रीय भूमिका निभाई जिनमें एक ओर प्रवासी मजदूरों के ठहराव तथा सुरक्षित घर वापसी सुनिश्चित करना और दूसरी ओर विदेश से रेवाड़ी जिले में आने वाले लोगों का क्वारंटाइन मेडिकल प्रभार आदि का विभागीय तालमेल देखना। अपनी इन तमाम सेवाओं के लिए वे अनेक बार शिक्षा विभाग तथा जिला प्रशासन के अधिकारियों द्वारा विशेष रूप से अलंकृत किए जा चुके हैं। वर्तमान कोविड-19 भी वे अनेक सामाजिक संगठनों के साथ मिलकर एक सामाजिक कार्यकर्ता के तौर पर अपने उत्कृष्ट सेवाएँ दे रहे हैं।

सत्यवीर नाहड़िया
प्राध्यापक रसायनशास्त्र
राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
खोरी, रेवाड़ी, हरियाणा

सबसे मीठा फल

कुछ दिन पहले की ही बात है। रामस्वरूप ने अपने बेटे को कुछ रुपये देकर बाज़ार से फल लाने के लिए कहा क्योंकि रामस्वरूप की पत्नी व बेटी ने नवरात्र व्रत रखे हुए थे। बेटा रुपये लेकर बाज़ार चला गया। वहाँ फलों की अनेक दुकानें लगी हुई थी जो ताजा व मीठे फलों से भरी हुई थी। बेटे ने चारों तरफ नजर घुमाई ।

तभी उसकी नजर एक वृद्ध महिला पर गई जो भूख-प्यास से व्याकुल दिखाई दे रही थी। वह उस वृद्ध महिला के पास गया तथा व्याकुलता का कारण पूछा, लेकिन वृद्ध महिला कुछ नहीं बोल सकी क्योंकि भूख-प्यास के कारण उसके मुख से आवाज़ ही नही निकल पा रही थी।

रामस्वरूप के बेटे ने उन रुपयों से वृद्ध महिला को खाना खिलाया एवं जूस पिलाया। खाना खाने के बाद वृद्ध महिला बहुत खुश हुई तथा उसको ढेरों दुआएँ दीं।

उधर रामस्वरूप घर पर अपने बेटे का इंतजार कर रहा था। जब बेटा खाली हाथ घर पहुँचा तो उसने बेटे से कहा- मैंने तुम्हें फल लाने के लिए भेजा था। लेकिन तुम तो खाली हाथ आ गए।

बेटे ने कहा- पिता जी मैं तो सबसे मीठा फल लेकर आया हूँ। क्योंकि मैंने उन रुपयों से भूखी-प्यासी एक वृद्ध महिला को खाना खिला दिया तथा उस माँ स्वरूप वृद्ध महिला ने मुझे ढेरों आशीष एवं दुआएँ दीं जो कि किसी मीठे फल से कम नहीं थीं।

इतना सुनकर रामस्वरूप ने बेटे को गले लगाते हुए कहा- बेटा सच में ही तुम सबसे मीठा फल लाये हो।

कविता
प्राथमिक अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय- सराय अलावर्दी
गुरुग्राम, हरियाणा

गज़ब के चित्र बनाती है सुशीला

रंग हर किसी को अच्छे लगते हैं। रंग चाहे फूलों में समाए हों, इंद्रधनुष में हों, प्राकृतिक नज़ारों में, या फिर चित्रों में। चित्र सभी को इसलिए अच्छे लगते हैं क्योंकि इनमें रंगों के साथ-साथ आकृतियाँ भी होती हैं। रही बात बच्चों की तो बच्चों को तो रंग और भी अधिक भाते हैं। इसलिए उनकी चित्र बनाने में खास रुचि होती है। बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों में उनकी अभिव्यक्ति झलकती है। कुछ बच्चों को तो चित्र बनाने का जुनून सा होता है। ऐसी ही एक बाल चित्रकार है सुशीला देशवाल। राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, गोहाना (सोनीपत) की कक्षा ग्यारहवीं में पढ़ने वाली छात्रा सुशीला को पेंटिंग बनाने में इतनी रुचि है कि उसने ढेर सारी सुंदर-सुंदर पेंटिंग बनाई हुई हैं। सुशीला की पेंटिंग देखकर लगता है कि ये पेंटिंग किसी स्कूली छात्रा ने नहीं बल्कि किसी कॉलेज की छात्रा या अनुभवी चित्रकार ने बनाई हैं। इसके विषय भी मिले-जुले होते हैं यानी बच्चों व बड़े चित्रकारों जैसे। सुशीला के चित्रों में जहाँ ग्लेशियर, पहाड़, झरने, नदी, जंगल, खेत, खलिहान, गाँव, किसान, कार्यरत औरतें हैं, वहीं सूर्योदय व सूर्यास्त के मनोहारी रंग हैं। हवा में लहराते पेड़ों, झीलों का सौंदर्य, तारों भरी चाँद से उजली रात का सौंदर्य युक्त सन्नाटा, नभ में उड़ते पक्षियों की कतारें दिखाई देती हैं। इस बाल चित्रकार को पक्षियों से विशेष लगाव है इसलिए अलग-अलग पक्षियों के ढेर सारे चित्र इसने बनाए हैं। यही नहीं इसने अपने चित्रों में प्रकृति-संरक्षण का संदेश दिया है। पेड़, पानी व जमीन के महत्व को समझाने का अच्छा प्रयास किया है। इसके साथ-साथ सामाजिक बुराइयों, कुप्रथाओं के खिलाफ इसने तूलिका चलाई है। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ का संदेश दिया है तो भ्रष्टाचार, दहेज प्रथा, छुआछूत के खिलाफ आवाज बुलंद की है।

ये कई जगह पेंटिंग प्रदर्शनियाँ भी लगा चुकी है। सुशीला कई तरह के रंगों व पेंटिंग बनाने के आधार का प्रयोग कर लेती है। ये दूसरे बच्चों को भी पेंटिंग सिखाती है। रंगीन चित्रों के साथ-साथ पेंसिल वर्क भी खूबसूरती से करती है। ये बाल कलाकार पेंटिंग के साथ-साथ क्ले माडलिंग, सांझी बनाओ, रंगोली, मेहँदी रचाने तथा क्राफ्ट वर्क में भी

माहिर है। रंगमंच, एडवेंचर में इसकी खास रुचि है। इस बाल कलाकार ने बताया कि माता-पिता रेणु व राजेंद्र सिंह, प्राचार्य सुरेश नरवाल तथा शिक्षकों का योगदान प्रोत्साहित करने में रहता है। इस बाल कलाकार को जिला, राज्य व राष्ट्रीय स्तर के कई पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। सुशीला का लक्ष्य एक श्रेष्ठ कलाकार व शिक्षिका बनना है ताकि वह बच्चों का भविष्य बना सके।

सुशीला ने अपना यू-ट्यूब चैनल भी बनाया है जिसके माध्यम से ये बच्चों को ड्राइंग करना, पेंटिंग बनाना सिखाती रहती है। पिछले दिनों शिक्षा विभाग द्वारा मोरनी में आयोजित एडवेंचर कैंप के सम्मान समारोह में शिक्षा मंत्री कँवरपाल व विद्यालय शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव डॉ. महावीर सिंह सुशीला की चित्रकारी की प्रशंसा कर चुके हैं। कार्यक्रम अधिकारी रामकुमार का कहना है कि सुशीला एक जुनूनी, अनुभवी दक्ष बाल चित्रकार है। भविष्य में ये जरूर कुछ बड़ा काम पेंटिंग क्षेत्र में करके दिखाएगी। हमें गर्व है कि सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों में एक से बढ़कर एक प्रतिभा छुपी हुई है।

- डॉ.ओमप्रकाश कादयान

प्रश्न बैंक

सभी बच्चे ध्यानपूर्वक प्रश्नों के उत्तर देंगे। अपना मूल्यांकन स्वयं करना है।

प्र-1. हरियाणा प्रदेश में किस प्रकार का खानपान प्रमुख है?
क. दूध-दही ख. पिज्जा-बर्गर का ग. जंक फूड घ. सी फूड

प्र-2. हरियाणा में बाजरे की खेती किन जिलों में सर्वाधिक की जाती है?
क. फरीदाबाद-सोनीपत-कैथल-जींद
ख. महेन्द्रगढ़-रेवाड़ी-भिवानी-गुरुग्राम
ग. पंचकूला-यमुनानगर-अंबाला-कुरुक्षेत्र
घ. रोहतक-झज्जर- फतेहाबाद-सिरसा

प्र-3. गाय व भैंस के कितने थन होते है?
क. चार ख. दो ग. तीन घ. पाँच

प्र-4. कौन-सा पशु व जानवर है जिसके सिर पर सींग नहीं होते?
क. गाय ख. भैंस ग. बकरी घ. गधा

प्र-5. हरियाणा में सर्वाधिक दुग्ध उत्पादक जिला कौन-सा है?
क. जींद ख. रोहतक ग. कैथल घ. पानीपत

प्र-6. हरियाणा के सरकारी स्कूलों में बच्चों को मिड-डे मील में कौन सा दूध दिया जाता है?
क. वीटा मिल्क ख. मदर डेयरी मिल्क
ग. अमूल मिल्क घ. सरस मिल्क

प्र-7. हरियाणा के वर्तमान में कृषि मंत्री कौन हैं?
क. जेपी दलाल ख. कृष्णपाल गुर्जर
ग. डॉ. बनवारी लाल घ. ओमप्रकाश यादव

प्र-8. हरियाणा में टैक्टर बनाने का कारखाना किस जिले में है?
क. रेवाड़ी ख. फरीदाबाद
ग. मेवात घ. भिवानी

प्र.9. गेहूँ व चावल की पराली को जलाने से किस प्रकार का नुकसान होता है?
क. जमीन में कीटमित्र मर जाते हैं
ख. पर्यावरण को नुकसान होता है
ग. मृदा की उर्वरा शक्ति कम हो जाती है
घ. उपरोक्त सभी

प्र.10. हरियाणा के किस जिले में साक्षरता दर सबसे कम है?
क. पंचकूला ख. मेवात; नूँह
ग. सिरसा घ. फतेहाबाद

उत्तरः 1.-क 2.-ख 3.-क 4.-घ 5.-क 6.-क 7.-क 8.-ख 9.-घ 10.-ख

- हर्ष कुमार गुरु जी
प्राध्यापक समाज शास्त्र
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
बीकानेर, रेवाड़ी, हरियाणा

अब छज्जों, छतों पर हरीतिमा बिखेरेंगे जंगल

प्रमोद दीक्षित 'मलय'

सदियों से ही मानव जीवन का प्रति के साथ अन्योन्याश्रित, जीवन्त और मधुमय संबंध रहा है। यही कारण रहा है कि विश्व की नदी-घाटी सभ्यताएँ भी नदियों के तट और अरण्य के समीप ही विकसित हुई थीं। संत तुलसीदास ने भी 'क्षिति जल पावक गगन समीरा; पंच तत्व यह बना शरीरा' के माध्यम से प्रकृति के इन पाँच महत्त्वपूर्ण अंगों से जीवन निर्माण की बात कही थी। कहने का यही आशय है कि मिट्टी, जल, अग्नि, वायु और आकाश के सह-संबंध से ही प्राणि मात्र का जीवन न केवल निर्मित होता है बल्कि उन्हीं के आधार पर संचालित भी होता है। प्राचीनकाल में ऋषि-मुनियों के आश्रम और आचार्यों के गुरुकुल भी सरिताओं के किनारे एवं जंगल के बीच ही स्थापित हुआ करते थे। वे एक प्रकार से संदेश देते थे कि यदि मानव को सुख और संतुष्टिमय जीवन जीना है तो उसे प्राकृतिक उपहारों और मानवेतर प्राणियों के साथ सह-जीविता के सिद्धान्त पर चलकर ही जीया जा सकता है। और खुशी की बात यह थी ऋषियों के इस मौन संदेश को मानव समाज ने सहजता से स्वीकार भी किया था। तभी तो प्रत्येक गेह में नेह के प्रतीक वृक्ष बहुलता से रोपित और पोषित किये जाते रहे थे। 'एक वृक्ष दस पुत्र समान' की लोक अवधारणा का उदय भी मानव और जंगल की मित्रता एवं सह-अस्तित्व के सिद्धान्त पर ही हुआ था। पिछली शताब्दी तक समाज जीवन में फलदार पौधारोपण को पुण्य और वृक्ष विनाश को पापकर्म समझा जाता रहा है। राजस्थान में बिश्नोई समाज का वृक्षों के प्रति प्रेम और बलिदान विश्व विश्रुत है जिनसे प्रेरणा प्राप्त कर ही उत्तराखंड में 'चिपको आंदोलन' चला और सफल हुआ। लेकिन आधुनिक मानव सभ्यता व्यक्तिवादी चिंतन से प्रभावित है, इस कारण अपने सामाजिक कर्तव्य, दायित्व और संवेदना से परे होकर भोग और केवल भोग के पीछे भाग रही है। वह प्रकृति का संतुलित दोहन नहीं, बल्कि शोषण पर आमादा है। इस नई पीढ़ी के लालच ने प्रकृति का विनाश किया है। जंगल काटे, नदियों के स्वच्छ जल को गंदा किया, वायु प्रदूषित की, पहाड़ों को खोद डाला और अंतरिक्ष को भी कचरे से भर दिया। जंगलों के विनाश से प्रकृति के फेफड़े बीमार हो गये और जैव विविधता एवं प्राकृतिक चक्र असंतुलित हुआ। औद्योगिकीकरण एवं शहरीकरण से हुए पर्यावरण विनाश की स्थिति का अंदाजा दुनियाभर में हुए शोध एवं सर्वेक्षणों से स्पष्ट है कि पिछले पच्चीस सालों में ही भारत के क्षेत्रफल का लगभग डेढ़ गुना जंगल मानव की भोगलिप्सा की भेंट चढ़ चुका है। ऑक्सीजन के स्तर में हो रही निरन्तर कमी और हवा में घुलते जा रहे ज़हर ने ही मनुष्य को विनष्ट हुई वन सम्पदा की क्षतिपूर्ति के लिए सोचने एवं कुछ नया करने को मजबूर किया है। शहर के अन्दर जमीन के अभाव में विकल्प के रूप में बहुमंजिली इमारतों के छज्जों, छतों और बालकनी में जंगल उगाने की कला विकसित की गई जो 'वर्टिकल फॉरेस्ट' के नाम से लोकप्रिय हो रही है। हालांकि मकानों की छतों और छज्जों में पहले भी पौधारोपण कर घरों को हरा-भरा रखने का प्रयास किया जाता रहा है पर वह केवल शौकिया स्तर पर था, जिसे 'रूफ गार्डेन' नाम से जाना जाता रहा है और जिसमें बहुत छोटे पौधे और बेलें ही रोपित की जाती रही हैं। लेकिन 'वर्टिकल फारेस्ट' वैज्ञानिक अवधारणा पर आधारित एक क्रियाशील प्रेरक मॉडल है जो मानव और प्रकृति के सह-अस्तित्व एवं पुरातन संबंधों की नवल व्याख्या है।

वायु प्रदूषण से मुक्ति ही 'वर्टिकल फॉरेस्ट' की पृष्ठभूमि है क्योंकि प्रत्येक वर्ष दुनिया भर में लाखों लोग प्रदूषित वायु के कारण काल के गाल में समा रहे हैं। तो वायु शुद्धिकरण के लिए वैज्ञानिकों, पर्यावरणचिंतको एवं वास्तुकारों के गम्भीर चिंतन-मनन से उपजे 'वर्टिकल फॉरेस्ट' बनाने का विचार सर्वप्रथम 2009 में इटली के एक वास्तुकार स्टेफानो बोएरी ने प्रस्तुत किया था। 'वर्टिकल फॉरेस्ट' के अन्तर्गत ऐसी खास बहुमंजिली इमारतों का निर्माण किया जाता है जिसके कमरों, छज्जों एवं खुली छतों में पेड़-पौधे लगाये जाते हैं जो शहरी वायु को शुद्ध कर उसकी गुणवत्ता बेहतर कर सकें। स्टेफानो बोएरी ने ही दुनिया का पहला 'वर्टिकल फॉरेस्ट' इटली के मिलान शहर में 2014 में तैयार किया जिसमें 110 एवं 76 मीटर ऊँचे क्रमशः 26 एवं 18 मंजिलों वाले टावरों में पचास प्रजातियों के 10 से 20 फीट ऊँचाई वाले 500 बड़े वृक्ष, 300 छोटे वृक्ष, 5,000 झाड़ियाँ और 11,000 अन्य पौधे लगाये। भवन जंगल का भार वहन कर सकें और वृक्ष इतनी ऊँचाई पर तेज हवा के प्रवाह में टूटें-उखड़ें नहीं। इसलिए वास्तुकार एवं वनस्पतिविद लौरा गट्टी के नेतृत्व में एक टीम ने तीन साल तक गहन शोध कर भवनों मे लगाई जा सकने वाली वृक्ष प्रजातियों की पहचान और चयन किया। साथ ही इमारतों की डिजाइन भी तदनुरूप निश्चित एवं विकसित की गई। स्टेफानो बोएरी की ही देखरेख में एशिया का पहला 'वर्टिकल फॉरेस्ट' चीन के जियांग्सू प्रान्त में 200 एवं 108 मीटर ऊँचे दो टावरों में विकसित किया जा रहा है। इन्हीं के निर्देशन में नीदरलैंड में दुनिया का तीसरा 'वर्टिकल फॉरेस्ट' पर काम पूरा होने वाला है। भारत में भी इस दिशा में शोध एवं प्रयत्न गतिमान हैं। ये जंगल जहाँ शुद्ध वायु का उत्सर्जन करते हैं वहीं कार्बन डाईऑक्साइड का अवशोषण भी। इसके साथ ही ये सड़कों की धूल से बचाते हैं और तेज धूप एवं कड़ी ठंढ से भी। एक प्रकार से ये मानव के रक्षा कवच के रूप में अपनी भूमिका निर्वहन कर रहे हैं।

कह सकते हैं कि 'वर्टिकल फॉरेस्ट' एक नूतन फलक है जिसमें मानव द्वारा प्रति के शोषण के कथा-चित्र पूरी हरीतिमा और आभा के साथ पश्चात्ताप के रूप में अंकित हैं। भवनों में खुशी से झूमते जंगल और खिलखिलाते सुमनों में सुखद भविष्य की संभावना का सूरज नित मुस्काता है और वृक्षों की जड़ों में मानव-मन के प्रायश्चित के आँसू हैं और जिसमें आने वाली पीढ़ी के लिए मौन संदेश है कि यदि जंगल नहीं बचे तो हम भी नहीं बचेंगे।

लेखक शिक्षक एवं शैक्षिक संवाद मंच उप्र के संस्थापक हैं

प्यारे बच्चो!

'बाल सारथी' आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूंगी।

- तुम्हारी यामिका दीदी

सामान्य ज्ञान

प्रश्न-1. भारत का कुल क्षेत्रफल कितना है?
उत्तर : 32,87,263 वर्ग किमी
प्रश्न-2. भारत कितने देशों से अपनी सीमाएँ साँझा करता है?
उत्तर : 7
प्रश्न-3. भारत की स्थल सीमा से कौन-से देश लगे हैं?
उत्तर : बांग्लादेश, चीन, पाकिस्तान, नेपाल, वर्मा, भूटान
प्रश्न-4. भारत की जल सीमा किन देशों से मिलती है?
उत्तर : मालदीव, श्रीलंका, बांग्लादेश, म्यांमार व पाकिस्तान
प्रश्न-5. कर्क रेखा किन राज्यों से होकर गुजरती है?
उत्तर : राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, छतीसगढ़, झारखंड, पश्चिमी बंगाल, त्रिपुरा और मिजोरम
प्रश्न-6. भारत का मानक समय कहाँ से लिया गया है?
उत्तर : इलाहाबाद के निकट नैनी नामक स्थान से
प्रश्न-7. भारत के मानक समय और ग्रीनविच समय में कितना अन्तर है?
उत्तर : साढ़े 5 घण्टे
प्रश्न-8. भारत में समुद्र तटरेखा वाले राज्यों की संख्या कितनी है?
उत्तर : 9
प्रश्न-9. किस राज्य की समुद्र तटरेखा सबसे लंबी है?
उत्तर : गुजरात
प्रश्न-10. कर्क रेखा भारत के कितने राज्यों से होकर जाती है?
उत्तर : 8

प्रेषक-
भूपसिंह भारती, शिक्षक,
राजकीय माध्यमिक विद्यालय डेरोली अहीर
जिला- महेन्द्रगढ़, हरियाणा

पहेलियाँ

1.चाशनी में डूबा रहता
किये बगैर मैं हल्ला,
बंगाल की हूँ एक मिठाई,
कहते मुझको -----।

2.उद्भव मेरा सब कोई न जाने ,
अंत न मेरा देखा,
गणित की आकृति हूँ मैं बच्चो
कहते मुझको --------।

3.जो गिनने के आती काम,
प्राकृत संख्या उसका नाम,
वैसे संख्या रही अनेक
पहली प्राकृत संख्या है -----।

उत्तर 1-रसगुल्ला, 2-रेखा, 3- एक

डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव
रॉवगंज कालपी जालौन, उत्तर प्रदेश-285204

रेल चली

रेल चली भई, रेल चली
बिन पटरी बिन तेल चली
सोनू, मोनू गोलू सब आओ
एक-एक करके जुड़ते जाओ
अगला इंजन बन जाएगा
गाड़ी वही चलाएगा ।
गार्ड पिछला बन जाएगा
झंडी वही दिखाएगा
रंग-बिरंगे प्यारे-प्यारे
बने बीच के डिब्बे सारे
स्टेशन इसका एक निराला
रुकेगी जाकर पाठशाला
कर आपस में यूँ मेल चली
टोली बच्चों की खेल चली
रेल चली भई, रेल चली
बिन पटरी बिन तेल चली ।

मास्टर हरिनिवास
राजकीय प्राथमिक विद्यालय
परखोतमपुर, खंड- जादूसाना
रेवाड़ी, हरियाणा

चार धूर्त भाई

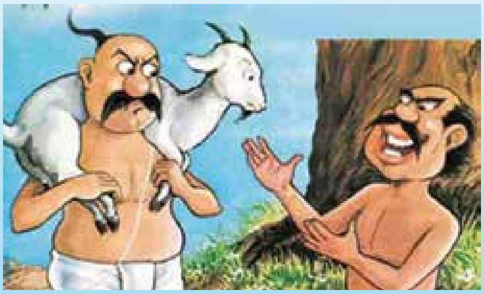

चार भाई कुछ पढ़े-लिखे थे। उनमें धूर्तता कूट-कूट कर भरी थी। एक बार उन्होंने एक ब्राह्मण को ठगने की योजना बनाई। एक ब्राह्मण पूजा-पाठ कराकर दूसरे गाँव से अपने गाँव जा रहा था। वह दान में मिले बकरे को अपने कंधे पर लिए जा रहा था। इन चार धूर्त विद्वानों ने अपना लक्ष्य बना लिया। आगे राह में जाकर एक विद्वान भाई उस ब्राह्मण को मिला। उसने ब्राह्मण को अभिवादन कर कहा- अरे भाई! इस कुत्ते को कंधे पर क्यों लिए जा रहे हो, इसे कोई चोट-ओट लग गई है क्या?'

ब्राह्मण बोला- ये बकरा है तुम्हें दिखाई नहीं देता क्या? और आगे बढ़ गया। कुछ दूर चलने पर ब्राह्मण को दूसरा राहगीर मिला, उसने कहा- 'अरे ब्राह्मण देव! इस कुत्ते को अपने कंधे पर क्यों ढो रहे हो? ब्राह्मण को कुछ संदेह हुआ, उसने बकरे को कंधे से नीचे उतारा, उसे ठीक से देखा और बोला- 'तुमने मुझे मूर्ख समझ रखा है क्या, बकरे को कुत्ता बताने से मैं तुम्हारी बातों में आ जाऊँगा क्या?' उसने बकरे को उठाया और आगे बढ़ गया।

आगे कुछ दूर ब्राह्मण चला ही था कि तीसरा राहगीर मिला। राहगीर ने ब्राह्मण को देखते ही कहा- 'छिः छिः, वेशभूषा से तो तुम ब्राह्मण दिखते हो और कुत्ते जैसे पशु को अपने ऊपर लादे हुए हो।' यह सुनकर ब्राह्मण को अधिक संदेह हुआ, वह सोचने लगा, दो राहगीर तो मिले हुए हो सकते हैं किन्तु तीसरा मिला हुआ नहीं हो सकता, उसने बकरा को नीचे उतारा, ठीक से देखा और थोड़ी देर वहीं रुक गया। जब बकरा को कुत्ता बताने वाला तीसरा राहगीर अपने रास्ते चला गया तब ब्राह्मण ने पुनः बकरे का निरीक्षण किया, आश्वस्त होने पर कंधे पर उठाया और चल दिया।

अपने गंतव्य ग्राम की ओर कुछ दूरी पर चला ही था कि चौथा राहगीर मिला। इसने भी ब्राह्मण से वही बात कही जो पिछले तीन राहगीरों ने कही थी कि 'तुम कुत्ते को अपने कंधे पर ढो रहे हो।' इस बार ब्राह्मण को पूर्ण विश्वास हो गया कि जो वह कंधे पर लिये जा रहा है वह कुत्ता ही है। वह सोचता है कि 'एक राहगीर गलत हो सकता है, दो मिले हुए हो सकते हैं, तीन भी किसी योजना को अंजाम दे सकते हैं, किन्तु अब तो जो मिल रहा है वही इसे कुत्ता बता रहा है, मैं ही गलत हूँ। यदि गाँव वाले देखेंगे तो क्या कहेंगे।' यह सोचकर उसने बकरे को कंधे से नीचे उतार कर छोड़ दिया और खाली हाथ ही अपने गाँव चला गया। इधर ब्राह्मण के दृष्टि से ओझल होते ही राहगीर बने ये चारों धूर्त भाई उस बकरे को पकड़ कर ले गये।

समाज में ऐसे धूर्त कभी भी अपना स्थान बना लेते हैं और कुछ लोगों की सहायता से संस्था आदि पर कब्जा जमा लेते हैं। फिर संस्था के धन को तो किसी न किसी प्रकार से हड़प ही लेते हैं, संस्था की विश्वसनीयता का लाभ उठाकर समाज को अनवरत ठगते रहते हैं। ऐसे लोगों से हमें पग-पग पर सावधान रहना चाहिए।

प्रेषक-डॉ. महेन्द्र कुमार जैन 'मनुज'
22/2, रामगंज, जिंसी, इन्दौर
म.प्र.

मैं नीरज-सा

भारत भू का भाल बनूँगा,
मैं नीरज-सा लाल बनूँगा!

मुझको भी अभ्यास करा दो,
बस इक भाला मुझे थमा दो,
बड़ा विजेता, मानो पापा,
मैं भी अगली साल बनूँगा,
मैं नीरज-सा लाल बनूँगा!

बहुत हुए अब कंचे गोली,
बनना है माँ मस्तक रोली,
देश लिए मैं लाऊँ मेडल,
बड़ी ग़ज़ब की चाल बनूँगा
मैं नीरज-सा लाल बनूँगा!

धीरे –धीरे रोज बढ़ूँगा,
ध्यान लगाकर खूब पढ़ूँगा
बाल उम्र से जब निकालूँगा,
सुन्दर स्वर्णिम काल बनूँगा,
मैं नीरज-सा लाल बनूँगा!

-श्रीभगवान बव्वा

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

आदरणीय अध्यापक साथियो व प्यारे विद्यार्थियो! प्रस्तुत हैं खेल-खेल में की जा सकने वाली कुछ विज्ञान व जीवनोपयोगी उद्देश्य को पूरा करती कुछ नई गतिविधियाँ-

1. परछाई से दिशाओं का पता लगाना।

धूप के समय धूप में एक सीधी खड़ी छड़ की परछाई के शीर्ष बिंदु पर निशान लगा लेते हैं। अब समय के साथ साथ परछाई स्थान बदलती है आधे घंटे के बाद फिर से परछाई के नए शीर्ष बिंदु पर निशान लगा लेते हैं। इन दोनों बिंदुओं को एक पेंसिल व स्केल की मदद से मिला देते हैं जो सीधी रेखा प्राप्त होती है। इस प्रकार प्राप्त रेखा के मध्य बिंदु पर लंबवत (+ का निशान बनाते हुए) पेंसिल को रख देते हैं। यह (+) निशान के चार बिंदु चारों दिशाओं का पता बताते हैं। इस गतिविधि को ट्रू नार्थ व ट्रू साउथ ज्ञात करना भी कहते हैं। विद्यार्थियों ने स्कूल में यह गतिविधि करके स्कूल प्रांगण में दिशाओं को मार्क किया।

2. प्लास्टिक का ज्वलन बिंदु व जल द्वारा ऊष्मा अवशोषण सम्बन्ध-

इस गतिविधि को करने के लिए हम एक डिस्पोजल प्लास्टिक गिलास लेते हैं। उसमें आधा से थोड़ा अधिक पानी भर लेते हैं। अब हम गिलास के ऊपरी सिरे पर माचिस की तीली जलाकर उससे आग लगा देते हैं। प्लास्टिक में वह आग जलते-जलते आगे बढ़ती है लेकिन जैसे ही वह आग पानी के संपर्क में आती है तो बुझ जाती है। ऐसा किस लिए होता है? क्योंकि प्लास्टिक जलते हुए जैसे ही पानी के सिरे तक पहुँचता है तो आग द्वारा उत्पन्न ऊष्मा को जल अवशोषित कर लेता है जिस कारण गिलास को प्लास्टिक को ज्वलन ताप जितना तापमान नहीं प्राप्त होता। वह जलना बंद हो जाता है। इस गतिविधि को बड़ों के निरीक्षण में सावधानीपूर्वक सुरक्षित स्थान पर करके देखना है। वैसे तो प्लास्टिक को जलाना पर्यावरण हितैषी नहीं है, परंतु इस विज्ञान गतिविधि को समझने के लिए आप सामूहिक रूप से इस गतिविधि को करके देख सकते हैं। इस गतिविधि द्वारा

हमें पता चलता है कि प्लास्टिक तब तक जलता है जब तक तापमान उसके ज्वलन बिंदु तक होता है और जैसे ही तापमान अवशोषित होना शुरू होता है तो गिलास का प्लास्टिक जलना बंद हो जाता है।

3. धागे से बर्फ उठाया जाना-

अपने घर के रेफ्रिजरेटर में से बर्फ के टुकड़े (आइस क्यूब) लेते हैं। उन आइस क्यूब्स को एक चौड़े मुँह के बर्तन में पानी भरकर पानी मे डालते हैं। वह तैरने लगते हैं। उन बर्फ के टुकड़ों के ऊपर एक धागा रख देते हैं। धागे व बर्फ के सम्पर्क बिंदु पर दो-दो चुटकी नमक की डाल कर एक मिनट इंतज़ार करते हैं। धागे के दोनों सिरों को पकड़ कर उठाते है तो बर्फ भी धागे के साथ ही उठ जाती है। ऐसा इसलिए होता है कि जब नमक को बर्फ पर डाला जाता है तो नमक बर्फ के ऊपर की पानी की पतली परत (फ़िल्म) में घुल जाता है जिससे इस परत का हिमांक बर्फ के तापमान से कम हो जाता है। यह परत जम जाती है जो धागे को जकड़ लेती है। अब धागा उठाने पर बर्फ भी साथ उठ जाती है।

4. बोतल-गुब्बारा बिगुल बाजा बजाओ-

एक प्लास्टिक बोतल, एक धागे की रील का भीतरी खोल, एक गुब्बारा ले कर हम बिगुल जैसी आवाज उत्पन्न करने वाला खिलौना बना सकते हैं। बोतल का ऊपरी हिस्सा काट कर उसके मुँह पर गुब्बारा चढ़ा देते हैं। गुब्बारे के दूसरे सिरे को काटकर उस पर सेलो टेप से रील का खोल फिट कर देते हैं। रील के खोल से फूँक मारने पर पर हवा द्वारा गुब्बारे के झिल्ली में कम्पन्न होता है जिससे ध्वनि उत्पन्न होती है। ये ध्वनि तरंगें कीपनुमा बोतल में आवर्धित होती हैं, जिससे बिगुल जैसी आवाज उत्पन्न होती है। गुब्बारे को खींचतान कर ध्वनि को भी कम ज्यादा कर सकते हैं।

5. धातुओं में उष्मीय संचरण का प्रयोग-

एक स्टील की रॉड पर मोम की सहायता से तीन-तीन इंच की दूरी पर पुश पिन चिपका देते हैं। इस रॉड को लैब से आयरन स्टैंड लेकर उसके कलम्प में कस देते हैं। पिनों वाली रॉड के दूसरे सिरे को मोमबत्ती से गर्म करना शुरू करते हैं। कुछ देर में एक एक करके पुश पिनें नीचे गिरने लगती हैं। यहाँ इस गतिविधि से पता लगता है कि जब एक धातु की छड़ को गर्म किया जाता है जिससे छड़ का एक सिरा दूसरे की अपेक्षा अधिक गर्म हो जाता है, ऐसी स्थिति में अधिक गर्म हिस्से पर धातु के कण बहुत अधिक आयाम से कम्पन्न करने लग जाते है और कम्पन्न के कारण वे ठंडे सिरे की ओर स्थित धातु के कणों से टकराते है और टकराव के दौरान वे अपनी ऊष्मा उन कणों को दे देते है। इस विधि से धातु की छड़ में ऊष्मा आगे बढ़ती है और पुश पिन का मोम पिघल जाता है और पिने नीचे गिरने लगती हैं। पिनों के क्रमानुसार गिरते जाना सिद्ध करता है कि ठोस चालक वस्तुओं में ऊष्मा उच्च ताप से निम्न ताप वाले सिरे की ओर संचरित होती हैं इसे ऊष्मा संचरण की चालन विधि कहते है।

6. गतिविधि आधरित अधिगम कार्यशाला-

इस अंक में प्रकाशित विभिन्न गतिविधियों को एससीईआरटी गुरुग्राम की एजुकेशनल टेक्नोलॉजी विंग के साथ एक कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न विज्ञान अध्यापक प्राध्यापकों के साथ साझा किया गया।

दर्शन लाल बवेजा
विज्ञान
ईएसएचएम सह विज्ञान संचारक
राउवि शादीपुर, खंड जगाधरी, जिला यमुनानगर, हरियाणा

कैसे बनें आदर्श विद्यार्थी?

प्रत्येक विद्यार्थी ज़िंदगी में सफल होना चाहता है, लेकिन बिना मेहनत के कोई भी सफलता के मुक़ाम तक नहीं पहुँच पाता। आजकल कोविड–19 की वजह से बच्चों की पढ़ाई पर बहुत प्रभाव पड़ा है। बच्चे स्कूल में एक दूसरे से, अध्यापकों से जो सीखते थे, ऑनलाइन की पढ़ाई में वह नहीं सीख पाते। अगर विद्यार्थी अपने समय का सही उपयोग न कर पाए तो वे बहुत पीछे रह जाएँगे। आदर्श बनाना कभी सरल नहीं होता, आदर्श बनकर ही भीड़ से अलग अपनी पहचान बनाई जा सकती है। आदर्श विद्यार्थी वही है, जो परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी हों, अपने लक्ष्य पर नज़र बनाए रखता है। मन में हौसला बनाए रखता है, क्योंकि आज का दिन दोबारा कभी नहीं आएगा।

सबको भली भाँति पता है कि सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता। एक आदर्श विद्यार्थी वह होता है जो अपने विषयों से सम्बंधित सब कुछ जानने की जिज्ञासा रखता है तथा उसके लिए प्रयास करता रहता है। एक आदर्श विद्यार्थी समय प्रबंधन को जानता है। अपने माता-पिता, अध्यापकों, सहपाठियों के प्रति आदरभाव व प्रेम-भाव रखता है। वह समय पर सोता है, समय पर जागता है, समय पर भोजन करता है और समय-समय पर स्वयं का आंकलन भी करता है और अपनी अफलताओं से निरंतर कुछ न कुछ सीखता रहता है। वह कभी नहीं चाहता कि उसका एक भी क्षण व्यर्थ जाए। आदर्श विद्यार्थी के मन में हमेशा प्रतिस्पर्धा की भावना रहती है। दूसरे को नीचा दिखाने की भावना उसके अंदर नहीं आती।

आदर्श विद्यार्थी सुबह उठकर अपनी प्रतिदिन की दिनचर्या का निर्धारण करता है। ब्राह्ममुहूर्त के समय जो पढ़ाई की जाती है वह कभी नहीं भूलती और कम समय में आप अधिक पाठ्यक्रम को पढ़ सकते हैं। रात्रि को अगर आप समय पर सो जाते हैं तभी सुबह जल्दी उठ पाएँगे। अक्सर देखा जाता है कि सुबह देर से उठने वाले विद्यार्थियों का स्वभाव चिड़चिड़ा होता है। बात-बात पर गुस्सा आता है। शरीर में चुस्ती नहीं रहती। पढ़ाई करने को मन भी नहीं करता, इसलिए सुबह सूर्य उदय होने से पहले उठें। सुबह के वातावरण में थोड़ा टहलें। इस समय ऑक्सीजन की मात्रा भी अधिक होती है और शरीर में चुस्ती भी रहती है। पढ़ने को मन भी करता है। अगर सुबह उठकर प्राणायाम, योगासन एवं सैर करते हैं तो आप स्वस्थ, सुडौल और आकर्षक दिखते हैं। यह आपकी स्मरण शक्ति बढ़ाने में भी बहुत लाभदायक है। अपना काम समय पर करें अपने प्रत्येक काम का टाइम टेबल बनाएँ। खेलने या मनोरंजन का समय, टीवी देखने का समय भी निर्धारित करें। स्कूल में होने वाली खेलों व अन्य कार्यक्रमों में भी भाग लेना चाहिए। इससे मन में प्रतिस्पर्धा की और सहयोग की भावना पैदा होती है। ज़िंदगी का प्रत्येक क्षण क़ीमती है, उसकी क़द्र करें। आज अगर आप समय की क़द्र करेंगे तो कल समय आपकी क़द्र करेगा। आप अगर ज़िंदगी में सच्चाई, ईमानदारी रखते हैं और कड़ी मेहनत करते हैं तो आपका आत्मविश्वास तो बढ़ेगा ही, साथ-साथ आत्म-संतुष्टि भी होगी, जो ज़िंदगी का असली मक़सद है। छोटी-छोटी सफलताओं से आपके आत्मविश्वास में बढ़ोतरी होती जाएगी।

आदर्श विद्यार्थी के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण है उसका एकाग्रचित होना। आधुनिक युग में कई बार तनाव आ जाता है, उससे भी आसन, प्राणायाम, ध्यान के द्वारा निजात पाई जा सकती है। आदर्श विद्यार्थी को खुद पर विश्वास और मन में अहिंसा की भावना रखनी चाहिए। आदर्श विद्यार्थी कभी आलसी नहीं होता है। इसलिए हमें अपनी शारीरिक व मानसिक प्रगति करनी चाहिए ताकि हम लक्ष्य तक पहुँच सकें। कहते हैं कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। अतः विद्यार्थी को अपने खानपान का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए। डिब्बाबंद, फ़ास्ट फूड, तले हुए, मसालेदार खाद्य पदार्थ और शीतल पेय का सेवन कदापि न करें। हमें मोटे अनाज, दालें ,सब्जियाँ, सलाद, मौसम के फल, सब्ज़ियों का सूप तथा पर्याप्त मात्रा में पानी पीकर विशेष लाभ लेना चाहिए। कोल्ड ड्रिंक जैसे पदार्थों में हानिकारक रसायन होते हैं जो लीवर, आँतों तथा अन्य ग्रंथियों को क्षति पहुँचाते हैं। इन पदार्थों को बार-बार लेने की लत पड़ जाती है। अतः विद्यार्थियों को कभी इसका सेवन नहीं करना चाहिए। इसके स्थान पर निम्बू पानी, दूध-दही के बने पदार्थ का प्रयोग करना चाहिए। ध्यान रखें चबा-चबाकर खाना खायें। खाना खाते समय बात न करें, टीवी न देखें। मोबाइल बंद करके रखें, प्रसन्नचित रहें ।

जब हम किसी बात को एंज्वॉय करते हैं तो हमारे शरीर में गुड हार्मोन्स पैदा होते हैं। प्रातः उठने के बाद से लेकर सोने तक के समय का निर्धारण करना चाहिए । स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का होना और अच्छी आदतों को अपनाना, सकारात्मक दृष्टिकोण तथा उचित समय प्रबंधन एक आदर्श विद्यार्थी के वांछनीय गुण हैं।

आप अपने आज को सार्थक करें। व्यर्थ की सोच से, काल्पनिक विचारों से अपनी क्षमता को कम मत करें। जागरूक होकर नैतिक शिक्षा की पुस्तकें पढ़ें। आत्म विश्वास जगाने वाली ऑडियो-वीडियो देखें, टेक्नोलॉजी का फ़ायदा अपने कौशल को निखारने के लिए करें। स्वयं को सकारात्मक विचार दें कि जीवन में आप कुछ कर सकते हैं। जितना हो सके दूसरों के अनुभवों से सबक़ लें अपने घर के बुज़ुर्गों के पास बैठकर उनके काम आ कर उनके आशीर्वाद लें। कहते हैं- जितनी पेड़ की जड़ें मज़बूत होती है उतना ही पेड़ है लहराता है। अतः बड़ों के प्रति आदर का भाव, छोटों के प्रति प्रेम हमेशा मन में बनाकर रखें। आपके लक्ष्य में जो सहायक हों, वहीं दोस्त अपने आस-पास रखें। बुरे दोस्तों के साथ समय बरबाद न करें। ज़िंदगी में वही व्यक्ति ख़ुश व संतुष्ट रहता है जो वर्तमान का सदुपयोग करता है। कभी-कभी हार्मोनल चेंज की वजह से स्वभाव में परिवर्तन आता है, उस समय बड़ी सहनशीलता से, समझ से काम लेना चाहिए ताकि आप अपने लक्ष्य से भटक न सकें। हमें सकारात्मक का भाव मन में रखना चाहिए। ईश्वर में आस्था रखनी चाहिए। जैसा कि आप जानते हैं कि देश विभिन्न बाहरी और भीतरी समस्याओं से जूझ रहा है, लोग स्वार्थी हो गए हैं। अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए वे किसी का भी नुक़सान कर सकते हैं। ऐसे माहौल में अगर आप समाज में सहयोग देने की भावना रखें। तभी अपनी ज़िंदगी को सार्थक बना सकते हैं।

इंद्रा बेनीवाल
उपनिदेशक
माध्यमिक शिक्षा विभाग, हरियाणा

ज़िंदगी के नम्बर

'यार, मेरे नम्बर मेरी उम्मीद से बहुत कम हैं।' मेरा दोस्त मुझसे बोला।

'क्यों यार सत्तर परसेन्ट नम्बर कम हैं क्या?' मैंने उसकी तरफ चिप्स का पैकेट बढ़ाते हुए कहा।

'यार तेरे पैंसठ परसेंट हैं और तू खुश हैं।' वह हताशा में डूबा चिप्स को मना करते हुए बोला।

'देख यार, नम्बरों से ज़िंदगी नही, ज़िंदगी से नम्बर हैं। हम हैं तो परिवार है, खुशियाँ हैं। मछली पानी के लिये बनी है, पक्षी उड़ने के लिए। सूरज सुबह निकलने के लिये हर शाम ढलता है। बादल हो, बारिश हो, वह समय पर निकलेगा। चाहे हमें न दिखे। जब समय आएगा, हम भी अपनी जिंदगी में कुछ अच्छा जरूर करेंगे।' मैंने उसे समझाने की कोशिश की।

'पर यार, रिश्तेदारों में, पड़ोस में इंसल्ट फील होती है।' उसने अब असलियत उगली।

'यार तेरे मम्मी, डैडी ने कुछ कहा क्या?' मैंने पूछा।

'नहीं यार, वे बहुत अच्छे हैं।' उसकी आँखों में आँसू थे।

मैंने कहा, 'अगर तू कुछ उल्टा-सीधा करता है तो उनका क्या होगा। कभी सोचा। उनकी कितनी उम्मीदें हैं तुझसे कि तू कल उनकी सेवा करेगा। कौन है उनका तेरे सिवा बता?'

'नहीं यार, मैं कभी कोई गलत कदम नहीं उठाऊँगा।' वह बिलखते हुए मुझसे लिपट गया।

उसकी ज़िंदगी के नंबर कुछ ही पलों में कितने अधिक हो गए थे।

विनय मोहन खारवन
गणित लेक्चरर
राकवमा विद्यालय, जगाधरी, यमुनानगर, हरियाणा

2021

अगस्त माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

1 अगस्त- मैत्री दिवस
6 अगस्त- हिरोशिमा दिवस
9 अगस्त- क्रांति दिवस (भारत छोड़ो आन्दोलन दिवस)
11 अगस्त- हरियाली तीज
12 अगस्त- अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस
13 अगस्त- अंतरराष्ट्रीय वाम हस्त दिवस
15 अगस्त- स्वतंत्रता दिवस
19 अगस्त- विश्व फोटोग्राफी दिवस
20 अगस्त- मुहर्रम
22 अगस्त- रक्षाबंधन
27 अगस्त- मदर टेरेसा जन्मदिवस
29 अगस्त- मेजर ध्यानचंद जन्मदिवस
30 अगस्त- जन्माष्टमी

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

A Step Towards Sustainability

Ms. Rupam Jha

Everyday we hear about wastages and excesses leading to the degradation of the environment. This is at a time when we need sharing and caring. Every step towards minimalism is a step closer to a more sustainable world. This way the needs of the present can be met without compromising the ability of the future generations in meeting their needs. Long term goals become more important and the impact of any action is assessed in terms of what will happen to society as an aftermath of that action.

In the New Normal, the word Rescued has been used very often and appropriately. In common parlance it basically means to reuse, to put it to optimum use. Here another word pops up, that is Pre- Loved. To use something which someone has already used, loved using it and is now being used by the next user is what we can safely call pre-loved. The best example here can be that of books. An avid reader myself, I love books so would surely love to share the joys of reading with others. Books cannot be second- hand, they have to be Pre – loved.

There was all talk of rescued animals when Mr. Joe Biden was sworn in as the President of the United States of America. The President had rescued a stray animal, a dog, and kept it as a pet. A rescued animal now resides in the White House as a pet. Major is his name and he is a German Shepherd.

I too have a rescued pet, a small street cat, brought home by my daughter. He is white in colour and is neutered. Teja is his name and he appears to be very happy in his new home.

The pandemic has taught us the im-

portance of empathy. A lot of pets have been orphaned and are up for adoption, looking for a new home, they are pre-loved and know how to give and take love.

Fashion too has become sustainable in the current situation. We have been talking of reuse and recycle for a long time, now the new buzzword is rescued. Rescued garments can be made into shopping bags and this goes a long way in preserving the environment. One is familiar with pretty bits of left-over fabrics being strewn into cushion covers or even bedcovers. This art is especially popular in the states of Gujarat and Rajasthan. What masterpieces are created this way! The love of labour reflects in the end –product.

To preserve Mother Earth is the moral duty of all. There used to be a promotional campaign on television sometime ago, which said that we have not inherited this planet but merely borrowed it from our children. This attitude promotes sustainability. Also there is talk of not buying for the sake of buying but buying a garment which has a story to tell. This will help provide livelihood to artisans. There is wastage of water in the creation of a single T-Shirt, so be selective in your retail therapy.

You too can take this step towards sustainability. For minimalistic wastage of water while bathing, use a mug and bucket, avoid showers. Eat plant based meals with pulses and greens. Shop local and in the neighborhood as that reduces footprints. Reduce your usage of plastic, store food wisely and do not get swayed by labels.

The economy too needs to be sustainable.This can be done by reducing energy costs, better employee turnover, cost saving and resilience to uncertainty. Modernising existing infrastructure, creating a level field for clean energy and cutting down on red tapism are all steps towards sustainability. A sustainable economy lowers health care costs, brings in business and an environment of student learning. Wind energy, solar energy, crop rotation, efficient water fixtures all contribute towards sustainability. Now the time has come to implement these.

Time to undo the wrongs previously done. Time to wake up and take a call. Each one can change their own corner of the universe. Use renewable energy, give away unused items, save water and try growing vegetables such as tomatoes in pots. Of course you can go plastic free. Do invest in a bicycle and use it when you go shopping in the vicinity.

Sustainability is not just environmental but social as well. It can trace its roots to Social Justice and Conservation. Living within the limits of physical, natural and social resources, it paves a future for the next generation.

This monsoon season, do plant a tree. Fruit bearing trees are always a good option. Now you have small sized trees laden with fruit and not occupying much space and the future generations will benefit.

The steps are small so that we can all take them. Small steps will lead us to longer strides in a positive direction. Sustainability is for all of us.

Subject Expert
SCERT Haryana, Gurugram

Make Online Education a Happy and Healthy experience for your Children

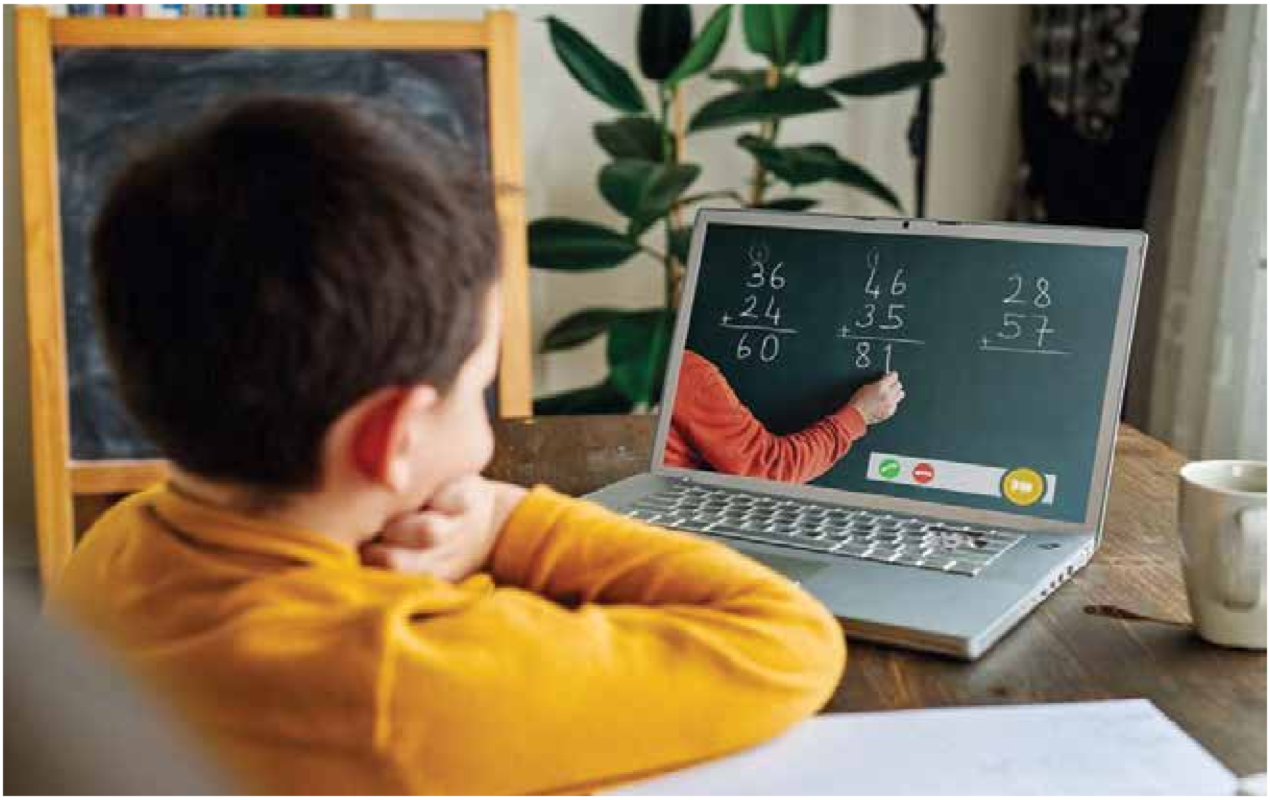

Dr. Himanshu Garg

The Educational system has to shift to online learning due to Covid-19. Classes will be held at home via virtual classrooms. Parents and children alike have shared one tremendous life style change since the start of Covid-19 i.e. More Screen Time. More Screen Time whether on laptops, mobiles, tablets or TV. We know that the extended screen time, even for positive experiences affected our mental & physical health badly. This is a major change that students need to adapt to with the help of their parents. To help students adjust to online learning, they need an environment that is conducive to learning, comfortable for their lifestyle, safe for their health and fun too all at the same time.So, here I am sharing some simple but effective tips for attending online learning at home that make online learning a happy and healthy experience for your children.

1. The first need is Blue light filters/Glasses. The blue light that comes from electronic gadjets can be a cause for discomfort to the eye if the level of contrast of the screen is not comfortable for viewing. Increasing eyesight problems with frequent headaches are common problems these days in children because of more screen time. It can affect the brain muscles too. As a workaround, blue filter apps or computer glasses can be used to shield the

children's eyes from the harmful rays.

2. 20-20-20 Rule is an excellent way to avoid the problem of eye strain. Spending long periods of time looking at computer screens is one of the culprits for eye strain. The rule of 20-20-20 involves taking a break every 20 minutes by looking at something that's 20 feet away for 20 seconds. On average, humans blink about 15 to 20 times every minute, but these numbers may decrease when someone is looking at the screen. Students must take regular breaks away from the computer screen to avoid such problems.

3. Physical activities play a major role in maintaining the levels of Calcium and Vitamin D in the body. Lack of physical activities, lack of sunlight exposure also contributes to Calcium and Vitamin D deficiencies. Obesity is also on the rise due to lack of outdoor physical activities. Children by being physically inactive are also losing their muscle tone and adding fat which is going to affect their growth thereby finding it very difficult to cope up with sports when they resume in future due to muscle rigidity. Deficiencies are on the rise in recent times in children and their reasons are very obvious. 30-45 minutes of sunlight exposure with a minimum of one hour of physical activities like Yoga, exercise, cycling, skipping, walking or other physical activities whenever feasible are a must for all growing children. Students can use their break time to leave their seats, step out of the room, or do some stretching. Even short bursts of movement go a long way in managing the effects of prolonged sitting. It will improve the blood flow in the whole body and minimize the effect of more screen time. We all know and research has also shown that the more physically active a child is during the growing period the better is their physical and mental health.

4. Healthy muscles need good hydration and healthy food habits. In addition to eating healthy food, children should also develop the habit of drinking adequate amounts of water. For most people, the ideal amount of water to consume may vary depending on several factors. With children attending online classes at home, parents could start training them to drink water gradually throughout the day, such as after 1 hour of each meal, before half hour of each meal. Also, serve them fruits that are rich in water, so children need to have more of them in their diet to regulate their fluid consumption better.

5. Unlike classrooms, the children are not bound to follow good ergonomics at home. They are taking online classes on bed and sofas are one of the commonest reasons that we can attribute to recent rise on back pains. Children need Ergonomic furniture. They need to have a proper table and chair set-up, one that matches their height and provides support to their body so that they won't suffer from posture-related problems.

6. Set the screen time of electronic gadgets after online classes. We all can easily attract and spend lot of hours in watching mobiles or TV. So to minimize screen time, introduce some other indoor games like Water Game, hula-hoop, Ludo, Business and Carom Board etc. These are the games of the older generation but these are still available in the market in attractive new models. And believe me, I applied this technique with my kids and it worked so well. Just have to mix it with your children's interest. Like these days unicorn is in trend and my daughter also liked it very much. I bought a water game that has unicorn pattern, it was so economic as compared to other trendy gadjets and she loves it and spends some time daily with it. These games develop concentration as well as refresh our mind too. Not only introduce the above said games, play these games with your children on a daily basis. By this simple trick, you will

spend quality time with your children and it builds a strong relation between you and your children. It refreshes the mind, relieves stress and re-energizes both of you and all the members involved in the activities.

7. Children must have a good amount of sleep. Because of more screen hours, depression and anxiety due to home confinement along with sleep disorders are also on the rise. Good quality sleep is vital for children's physical growth, cognitive abilities, and mental health. Experts recommend that children aged 6 to 12 must sleep 9 to 12 hours every day, while teenagers need 8 to 10 hours of sleep to reset their body clock. To promote good sleeping habits parents could try setting some house rules like no watching of TV or mobile at bedtime. The goal is to keep children away from things that may disturb their bedtime routine and keep them awake late at night. After having dinner, make it a habit to indulge in some activity like game playing, listening to music or some other activity with your children to relieve stress which is good for sound sleep.

8. Make time for fun with children. Humans are social beings, and in this period, students are faced with a different set of challenges. With the lack of personal interaction with their teachers, classmates, children can easily feel isolated or socially detached. As such, parents and older members of the family should make themselves available and spend quality time with children. Weekends should be free of any school work but instead filled with recreational activities like gardening, art , singing, dancing etc. These recreational activities depend on the taste of your children and availability of resources. These things can be good reminders for children that, despite the challenges, they have their family to support them.

9. Online classes can go for hours, so it's essential to keep the air in the study area clean and fresh. A well-ventilated room with open doors and windows and electric or exhaust fans allow fresh air to get in and keep stale air out.

10. Students will find it easier to concentrate on their school work if their study area is separated from the busy parts of the house, such as the living room, dining room, or kitchen. Quiet surroundings are helpful to work properly from the children.

11. The last but the most effective tip to reenergize the whole body is chanting "OM" Mantra. OM is not just a sound; it's a vibration of the universe. This sound generates vibrations in the whole body that helps to improve concentration, reduces stress and anxiety.

As students transition to online learning, they may need a little help until they get used to the new system. Parents need to be cautious as well as to make sure that their children remain fit and healthy. Parents have a critical role to play in ensuring that students are not only productive but also healthy with body and mind while attending online classes from home. Hope these simple tricks make online education a happy and healthy experience for your children.

Asstt. Professor
Govt. College for women, Jind

Educational Leadership Skills Pave for Institutional Excellence

'If your actions inspire others to dream more, learn more, do more and become more, you are a leader' said John Quincy Adams, the sixth President of USA. This portrays the spirit of leadership in any area of activity including education. School is the foundation in any system of education. It is well said, therefore, that 'School education makes a difference' and it is not merely an epistemic slogan. The effective foundation of school education can be said to be sine qua non of national development. It is necessary, therefore, to make efforts to equip the schools, especially the Government schools, with all such inputs that make them effective.

It is recognised all over the world that effective Educational Leadership (EL) is the right answer to the ineffective school. This was the focused feeling when educational/school leadership, a new concept in India, emerged in the western countries during the later period of the last century. EL, it may be mentioned, is interdisciplinary in nature but at the same time distinguishes itself focusing on human development, pedagogy and epistemology.

Educational Leadership, in this context, may be considered second only to teaching. Effective EL presupposes

the extensive knowledge of the instructional environment. An effective Head has the ability to delegate, inspire and communicate effectively with a sense of trust in all the members of the staff, as a team, enabling the school to achieve the targeted goals. Similarly, a teacher, without EL skills, may not be able to reach the heads and hearts of the students in a classroom situation or in respect of other co-curricular activities. EL applies to schools with greater force due to human element at every step. Evidence suggests that effective EL is essential to create a learning environment where every student has access to high-quality education. It is suggested by Professors like David Woods et al, on the basis of research and with reference to difficult schools, that the Heads must be equipped with EL qualities like high expectancy and ambition for the success in their efforts; showing confidence; focusing on improving teaching learning process; expertise in assessing the continuous progress of the student ; highly conscious of inclusiveness;provision of the opportunities to each child in learning and the teacher in professional growth;developing community feelings with parents and others to support the cause of students and teachers; and stress on self-evaluation and data analysis about school affairs . EL, it may be noted, applies to all the levels of administration as much as to a school.

Unfortunately, our schools, especially Government schools, are lagging not only in learning achievements but also in other areas. Blame for such a situation is usually laid at the door steps of the Head and the teachers. But perhaps, it is too much to blame them, for whole of the fault, who are reeling under the weight of transactional nature of administration and management as enshrined, for instance, in Articles 165 and 166 of the Haryana Education Code. Unprecedented expansion in education, development of technology, a large number of responsibilities calling for both academic excellence and managerial abilities, extra-ordinary demands of teaching learning process and change in cultural values are some of the other reasons that call for a great amount of ingenuity and special leadership skills among the teachers and the Heads of schools. The difficulties soar up especially when there is no provision of induction programme for the newly appointed/promoted Heads and they are neither aware of administrative or financial rules and EL skills to combat the difficult situation they get confronted with. Similarly, a teacher is not put to induction programme or sufficient period of meaningful teaching practice confronting actual situation. Under these circumstances the schools suffer. It has been revealed in a research study conducted in 2008, in which the responding Principals opted for three months' induction course to make them more effective. Of course, there

are some Government schools with higher rate of learning outcomes as well as good performance in other activities. It is due to certain inborn qualities of leadership in some of the Heads and teachers and they are an exception. EL skills are mostly learnt through training and experience.

EL, perhaps for the first time, has been well emphasized by the National Education Policy (NEP) 2020. EL is very much vital for the Head in a school or a teacher in a classroom, more so if the provisions of NEP 2020 are to be implemented appropriately. Such leadership should be capable of enlisting cooperation of the students, colleagues and parents to achieve the common goals of the institution. It has been found in a recent study that not even one school, out of 180 schools surveyed, could show improvement in achievement, including learning outcomes, without effective EL. It is proved that there is direct relationship between 'skilled school leadership' and 'positive student learning outcomes'.

The time has arrived when leadership traits should be developed not only among the Heads and the teachers but also the students for the enrichment of school culture, improving teaching learning process, and democratic values. The NEP 2020 states that the major function of an educational leader is to prepare a challenging, caring, creative and supporting environment that is conducive to learning outcomes in various manifestations.

Under the circumstances it appears essential that the Heads should be provided a sufficient period of induction programme before being appointed as a Head or as a teacher. In a recently conducted research study relating to educational leadership it is revealed that the Heads and teachers, endorsing many facets of educational leadership skills, desire to be equipped with leadership qualities. Some leader trainers can be employed or some of our heads and teachers can be deputed to some leadership school for training as master trainers. It also calls for some logistic arrangements for monitoring as well as to substantially help the teachers and the Heads like formation of committees at the main administrative levels, production of some literature pertaining to school leadership, use of ed-tech, laying down of minimum standards of expectancy in quality education as a result of introducing leadership in schools, evaluation process and self-check list for those enrolled in leadership training, ethical approach in schools, formation of institutional planning and the like may be prepared before launching of the programme in a school. In this regard it is also suggested that the Heads should be given a free hand in administrative and financial management with full accountability. It may also be essential to develop Middle Level leadership, like a vice Principal and coordinators for every department like Primary, Middle and Secondary, in every school to be jointly responsible for quality education in all respects. Zero vacancy schools have also to be ensured. The administrative and logistic arrangements will surely pave the way to effective and enlightened schools. The SCERT may consider to undertake a meaningful research in the leadership skills in the state.

Dr. S. Kumar
Dy. Director School Education, Haryana (Retd.)
Former Director, Bharat Scouts and Guides, NHQ, New Delhi

Improving English Vocabulary among Primary School Students through Activity Based Learning

Introduction : English may not be the most spoken language in the world, but it is the official language of 53 countries and spoken by around 400 million people across the globe. Being able to speak English is not just about being able to communicate with native English speakers; it is the most common second language in the world. Learning English is important and people all over the world decide to study it as a second language. Many countries include English as a second language in their school syllabus and children start learning English at a young age. The condition in our society and especially in government schools is very poor. Students of class sixth can't even use common English vocabulary in their daily life. Speaking and Writing English fluently is like a day dream for our government school students especially in rural areas. Here through this action research project an endeavour is made to find the possible causes for this poor performance and seek possible solutions to rectify the underlying causes.

Identification of the Problem : Selection of research problem depends on several factors such as researcher's knowledge, skills, interest, expertise, motivation & creativity with respect to the subject of inquiry. A research problem may come from several sources. In this research the investigator used the following sources to identify the problem:

a) Personal Experience: Day-to-day personal experience of a researcher

may serve as good source of ideas to formulate a research problem. The investigator is well familiarized with the target group of this research group as she has taught English as a subject for almost four years in rural areas. She analyzed that there is a great need to study the causes and remedy for poor English Vocabulary among Primary school students in Government schools and bring desirable improvement as well.

b) Exposure to field situations: During field exposure, researchers get a variety of experiences, which may provide plenty of ideas to formulate research problems. Now the investigator is working as an Assistant Professor in DIET Madina, Rohtak which is situated in a rural area. Each faculty member has adopted a school for improvements in the teaching learning process. Here also the investigator met with the same problem and discussed it with Senior Lecturers, Administration of the school, School Teachers, School Management Committee and Village Panchayat. This creative discussion with them increased the curiosity of the investigator to take the problem in hand and make sincere efforts to improve English vocabulary which in turn will help the students to overcome English phobia.

Keeping in mind the time and scope of action research, the investigator will delimit the present study to students studying in 3rd class of government Primary School Ghillaur, Rohtak, Haryana only.

Statement of the problem

"Improving English Vocabulary among Primary School Students through Activity Based Learning"

Probable Causes and concerns: Probable Causes and concerns related to the problem are categorized into three major heads i.e. Individual, Family and school which are discussed as under:

Individual

» Lack of Attention.
» Fear of English Language.
» Poor Exposure of Students.
» No use of AV Aids/Available Resources.
» Mere Passive participants in Teaching Learning Process.

Family

» Parental Education
» Lack of Awareness
» No use of English Language.

School level

» Lack of Proper Attention.
» Artificial Environment.
» More use of Grammar cum Translation Method
» Unavailability of Language Laboratory
» Less number of activities in Classroom.
» No creative use of Library Resources.

Objectives of the Research:

1. To study and present the present condition of use of English Vocabulary at Primary level.
2. To analyze the present condition of use of English Vocabulary at Primary level.
3. To study probable causes for the present condition of use of English Vocabulary at Primary level.
4. To suggest the remedies to improve the present condition of use of English Vocabulary at Primary level.

Hypothesis:

1. It is possible to enrich English Vocabulary of 3rd class students by providing a combination of strategies.

Sampling : In the present study, 3rd class students of Govt. Primary School Ghillaur Village will be selected.

Materials, Tools and Techniques:

» Self-constructed Test to check English Vocabulary of 3rd class students. (For Pre and Post-Test)
» Self-constructed questionnaire to check out the set causative factors.
» Discussion with Parents and Teachers.
» Extension Lectures by Experts using

Bi-lingual/Direct method.

» Activity centered approach.
» Personal Assistance to Students.
» Use of A/V aids and Other Resources.
» Interactive Morning Assembly.

Selection of Research Procedures:

In this section the investigator has explained selected variables, Sample, Material required and administration in the light of their appropriateness to the objectives and hypothesis.

Implementation of Action Plan:

The researcher had a very keen observation during the implementation stage of the project. During the initial stage the Family members and school teachers showed their reluctance to the project. Regular discussion made them assist the present project team in a productive and fruitful way. This left a positive impact on the students, Teachers and Family members and they cooperated in a very positive and comprehensive manner. The school authorities also admired the initiative taken by the researcher and supported in all possible ways.

Implementation of Action Plan:

1. In the initial planning stage, target vocabulary items were carefully identified, taking into consideration the words introduced in the textbooks as well as pupils' prior knowledge, interests and needs.
2. New vocabulary items were displayed on the learning walls in the classrooms. A reading corner was set up to promote a reading to learn culture and self-learning. A variety of theme-based books related to the tryout modules were displayed for pupils to borrow or read during recess or lunch time.

» Certain Packing and activities of daily routine were carried out to develop basic life skills along with enrichment of vocabulary like Gift Pack, Bag Pack, Tour Packing, Photo Frame Making, Family Tree etc.

4. **Word Wizard Activity:** Arrange the alphabets to form Words. Example 1(Sports Related Words) 1. bletanisten 2. ballketbas 3. batdonmin 4. balfolot 5. Einstn
5. **Word Cards Game:** neck tie, shoe laces, seat belt, school bag, pony tail, chop sticks, tooth paste, tooth brush, neck lace, hair brush, paint brush.
6. **Activity:** Cleaning Messy Classroom.
7. **Odd One Out:** Guava, Apple, Carrot, Grapes, banana

Graphical Comparison before and after the Implementation of the Action Plan Findings:

Comparison before and after the Implementation of the Action Plan The changes evolved among the students of 3rd class, as a result of various Programmes and Activities carried out in and out of the school campus are categorized under 3 heads.

Individual :

Before the implementation plan students were afraid of English Language. Students of classes III could not respond to any question asked by the interviewer in English. Students in general lacked speaking skills. They could recognize small and capital letters. Only two students could read

simple words. Regarding writing skills they could join letters with some help and write simple words. Many of these students could not understand and/or answer simple questions in English language. None of the students could follow instructions, questions, stories, greetings etc in English. They could not differentiate between similar sounding words in English, identi-

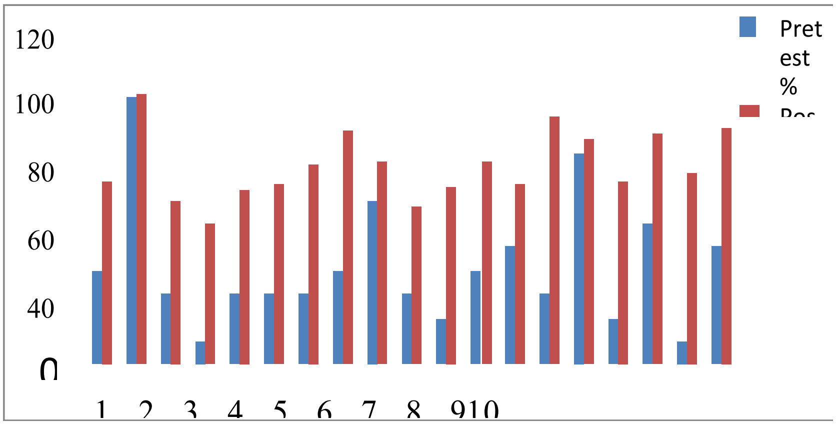

fy main ideas, summarize the story in their own words or draw conclusions. Before the implementation plan students were afraid of English Language. They even lacked self-confidence, they told the investigator that they can never learn English, and that whatever their teacher tells them they just cram it. The Investigator during the plan of action did not adopt traditional teaching methods. She just told students that we are going to play. We will not learn or cram anything. The students took interest and as the time passed they developed curiosity as well for English Language. Activities were carried out in such a manner that the students developed self-confidence and were no more afraid of English Language. They enjoyed English to an extent that they developed love for English Rhymes and Short stories. They started using English Vocabulary in their daily routine. They can now introduce themselves, their family school etc. they can report simple incidents in English language. Before the implementation of the plan there was no library but the investigator arranged a reading corner in their classroom and the students in free time started using the books for self-study. The tryout experience showed that active use of word banks was an effective way to help pupils gather new words at their own pace for their own reference as well as retrieve or recall the words they need in writing. By managing their personal word banks, pupils learnt to acquire self-management skills as well as study skills. They were thus able to develop good learning habits for lifelong learning.

Family :

During the interviews with the parents, the fact that emerged was that all the parents want their children to study English. Majority (90%) of the parents themselves could not speak in English; some of them could speak a few words of English but could not speak complete sentences. They speak many words without knowing that these are English words. Some parents said they had learnt words like book, pencil, pen, good morning, Sunday, mobile, radio etc. from their children. They were overwhelmed to report that now our child makes charts in English language and they have displayed the charts in their houses. Earlier the parents also expressed that their child can't learn English because of poverty and government school education but after the implementation of action plan their concept has changed and now even they motivate their child to use English Vocabulary. Some parents now listen to English rhymes and stories on YouTube for their child.

School level:

The observation by the investigator found that the classroom was teacher centred. The teacher said that she is aware of different teaching resources but these were not available in classrooms. She used only the prescribed textbooks to teach English. She was just teaching English and not developing English Language. She could not locate teaching resources to improve classroom interaction with children. She could not design materials and activities to meet learners' needs and interests. After the Implementation Plan administration and Teachers started taking initiation to make students aware about English Vocabulary. She could easily think and arrange various activities in the Classroom. She continuously took steps for proper use and maintenance of reading corner. The Head of the school became active and enthusiastic. She assisted the teacher to keep the classrooms lively and full of interesting activities to keep the children's interest intact. She now motivates children to participate in the classroom activities and English Language learning processes. The teacher made groups and promoted peer tutor-

ing. The Teacher now shows creativity in using textbooks. Lots of oral and written practice is carried out using material beyond textbooks.

Conclusion:

During the investigation, the investigator noticed that there are several hindrances in the enrichment of English Vocabulary among Government Primary School Students. There is not any single method, strategy and technique that can remove these obstacles and problems. The study revealed that a combination of various strategies, methods and techniques can help in enriching English Vocabulary among the Government Primary School Students. Before the implementation of action plan the students were noticed as having poor or average vocabulary. This lack of vocabulary gave rise to many hindrances in learning English language. The laborious action plan of the investigator, her hard work, co-operation from teachers, Head of the institution and family members made this project a great success.

Recommendations:

1. The researcher recommends that this study can be conducted at cluster, block and District level.
2. The students of classes 4th, 5th and upper primary level can be included in the course of the study.
3. Workshops for the teachers should be conducted to make the students utilize the available sources to increase their Vocabulary.
4. Extension lectures by subject experts should be conducted at various levels to increase their vocabulary.
5. Combination of various methods, techniques and strategies should be adopted to increase vocabulary.
6. Activity based learning in accordance with daily life routine helps in improving Vocabulary.

References:

» Marwan Bataineh (2014) A review of Factors Associated with Student's Lateness Behavior and Dealing Strategies, Journal of Education and Practice, Vol.5, No.2, 2014.

» Orawiwatnakul (2013), "Crossword Puzzles as a Learning Tool for Vocabulary Development", Electronic Journal of Research in Educational Psychology, v11 n2 p413-428 Sep 2013

» Kim, Daesang& A. Gilman, David. (2008). Effects of Text, Audio, and Graphic Aids in Multimedia Instruction for Vocabulary Learning.. Educational Technology & Society. 11. 114-126.

» Mustafa, Hema&Sain, Noridah& Abdul Razak, Noor Zainab. (2012). Using Internet for Learning Vocabulary among Second Language Learners in a Suburban School. Procedia - Social and Behavioral Sciences. 66. 425–431. 10.1016/j.sbspro.2012.11.286.

» Al-Sharafat (2012), "The effectiveness of vocabulary learning website games on English language learners' communication skills", International Journal of Learning Technology, Volume 7 Issue 2, July 2012, pp: 192-211

» Lin, Chih-Cheng; Hsiao, Hsien-Sheng; Tseng, Sheng-ping; Chan, Hsin-jung (2014), "Learning English Vocabulary Collaboratively in a Technology-Supported Classroom", Turkish Online Journal of Educational Technology - TOJET, v13 n1 p162-173 Jan 2014

Dr. Suman Lata,
Assistant Professor,
DIET Madina, Rohtak

Dr. Manjeet Kumar,
Assistant Professor,
DIET Madina, Rohtak

Bio-photovoltaic Cells: A Green Energy Approach

Vijender Kumar

Due to rising economic growth, there is increased demand for energy and thus a more pronounced use of fossil fuels which then leads to more serious problems such as energy crisis and more consequential environment pollution.

In the 21st century, CO_2 emission, mainly due to manmade activities, is leading to the rise in atmospheric temperature as a reason of global warming. These irreversible manmade activities can change the climate, and the global sea level will increase from 0.4 m to 1.0 m, if atmospheric CO_2 concentration in 21st century exceeds 600 parts per million by volume.

To limit the environmental impact of greenhouse gasses, future energy sources should be renewable and carbon neutral. This would include biomass products for energy generation such as growth plants and crops, algae and organic wastes. From the food security point of view, both micro and macro algae have attracted considerable interest as a potential feedstock for a bio-based economy.

It has been already reported that the efficiency of CO_2 fixation and the growth rates of photosynthetic micro-organism, such as microalgae and cyanobacteria, are much higher than the plants cultivated on land.

Biophotovoltaic cells

The main characteristic of BPVs is the utilization of oxygenic photosynthetic bio entities only, which breakdown water when illuminated (Fig.1). The electrons thus produced are transferred to the anode via IEET or DEET mechanism. Systems other than BPVs may or may not be able to separate charge from water. The bio entities involved in BPVs light harvesting system may be sub-cellular proteins; photosynthetic reaction centres or whole cell systems of blue green algae or photosynthetic bacteria. BPVs have photosynthetic microorganisms.

According to McCormick et al. only 37 studies on BPV were conducted from 1964 to 2008. However, in the last decade more than 100 articles were published in various scientific journals (McCormick et al., 2015).

In this article, will briefly explicate the concept and working of photosynthetic reaction centres. The process of photosynthesis is integral in various autotrophic organisms including plants. The light reactions of photosynthesis occur through the photosynthetic reaction centres; photosystem I and photosystem II (Fig. 2). The thylakoid membranes inside chloroplasts are the chief sites containing the photosynthetic reaction centres where photosynthesis occurs. Although cyanobacteria does not contain chloroplasts, they contain the photosynthetic apparatus necessary to carry out photosynthesis. Chloroplasts contain light-absorbing molecules called chlorophylls; chlorophyll a and chlorophyll b while photosynthetic bacteria contains bacteriophyll. Other than these, secondary pigments are also present including carotenoids and phycobilins. These pigments absorb light in various ranges. Photosystem I contains chlorophyll a or P700 while photosystem II contains chlorophyll b or P680 (The numbers, P700 and P680 refer to the range in which they absorb light). Both photosynthetic reaction centres work in the form of a Z scheme of electron transport. When a photon of light falls on PS-I, the electrons become excited and thus move to a higher energy level. The excited electron moves through a series of electron carriers and is accepted by NADP+. The electron carriers include phylloquinone, iron sulphur protein complex, ferrodoxin and lastly NADP+. After accepting electrons, NADP+ is converted to NADPH. Since the P700 is oxidized after losing electrons, it becomes unstable resulting in an electron gap. This gap is overcome by the P680 or chlorophyll b when it is hit by light. The electrons in P680 become excited and move through another chain of electron carriers eventually reaching P700. The chain of electron carriers include; pheophytin, plastoquinone, cytochrome bf complex, plastocyanin and lastly P700.This process also results in an unstable P680. However, the P680 can gain electrons through its oxygen evolving complex (OEC) by photolysing water to generate electrons. The Z scheme of electron transport through P700 and P680 is illustrated in Fig. 2. The net reaction of water photolysis and conversion of NADP+ to NADPH is given below.

$2H_2O + 2NADP^+$□ $2NADPH + 2H^+ + O_2$

BPVs utilize both PS-I and PS-II to generate energy from light. These cells use oxygenic PS-II reaction centres.

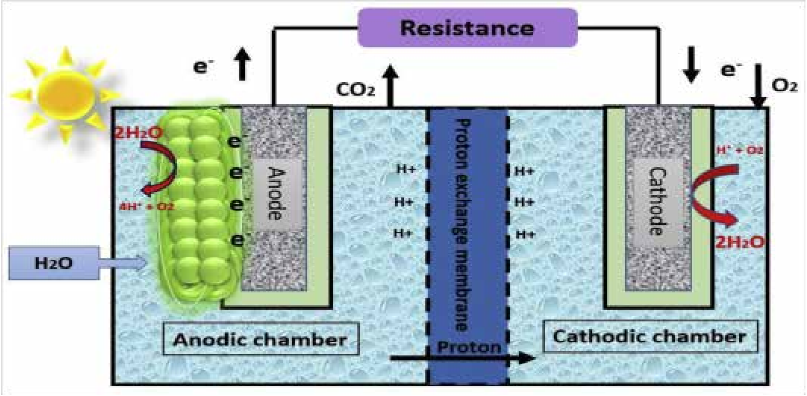

Fig.1 Pictorial display of biophotovoltaic cell exhibiting the use of sunlight by autotrophic/photosynthetic microbes in the presence of water as substrate to produce bioenergy.

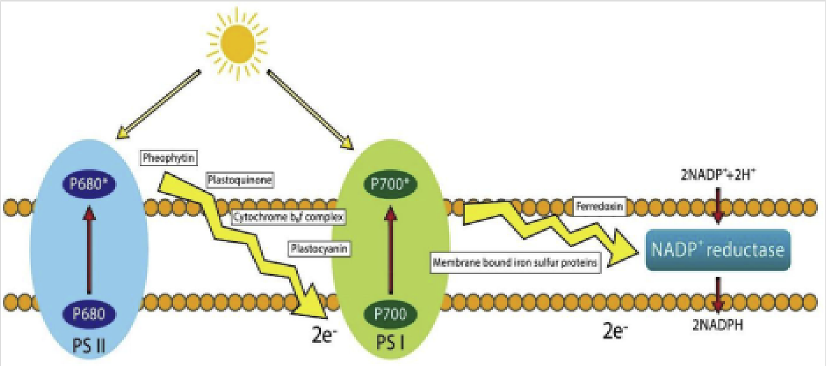

Fig. 2. Z scheme of electron transport chain through P700 and P680 photoreaction centres.

References

McCormick, A.J., Bombelli, P., Bradley, R.W., Thorne, R., Wenzel, T., Howe, C.J., 2015.

Biophotovoltaics: oxygenic photosynthetic organisms in the world of bioelectrochemical

systems. Energy Environ. Sci. 8, 1092–1109.

Lecturer in Biology
GSSS Bocharia
Block-Ateli, Mahendergarh,
Haryana

ADOLESCENCE AND PARENTING

Dr. Sanjiv Khatri

Adolescence is a period of various biological, cognitive and social emotional changes. It is one of the most difficult period to know, understand and work with. Adolescents see this development period as a turbulent one. All of a sudden the world begins to change for him during this period. At this time, there are changes in his relationship to himself and also his relationship with other people including his parents. One outstanding feature of the most fairly healthy adolescent is the extreme seriousness with which the child takes himself. He desires intensely to face issues realistically but has difficulties in doing so because of his rampant imagination. He insists that his problems are not within himself but in the environment. He indulges in fabulous day dreams in which everything is going to be different. Suppressing certain aspect of his personality makes him in turn rebellious, complaint and withdrawn. He begins to believe that he knows all the answers and feels that everyone around him is against him.

Adolescence has intense emotions and also has a very selective way of thinking about issues. Peer pressure is one of the biggest challenges an adolescent has to handle as he grows up. In this age, acceptance in peer group becomes really important for him. Socially unacceptable behaviors are all done under peer pressure especially during this phase. The adolescent shows no respect for his elders and teachers and try to indicate to these people that he too has distinction and originality.

This is where parents and teachers can play a vital role to help the child through this crucial phase of his life. As all of us are aware that nowadays parents are ambitious and highly demanding and want to see their child excel in every field. But experts claim pushy parents are the greatest losers here. Instead of aggravating the problem, parents should communicate regularly and honestly to their child. They should not reinforce negative messages in front of the child. Instead, the parents should try to weave magic with love and appreciation and try their level best to understand the child's point of view. Parent's reaction can make or break a child's confidence. A word of appreciation from parents has a "come back" effect. Do not curb your child's aggressiveness, otherwise he will either be more aggressive or subdued or nurse feeling of hatred. Do tell your child what language is unacceptable and anger does not have to be expressed in actions. Instead of giving a wishy washy response to child's unacceptable demands, be polite and firm in saying 'NO'. Be a source of strength for your child to help him tackle stress in life but don't become a source of stress for him. Condemn the behavior of a child and not him. Give the child freedom to express himself. This will make him feel important, valued and loved. Also, it will give him the satisfaction that he is respected and understood. This will enhance not only his self-confidence but also increase the respect he has for you. Keep guiding your child about right and wrong.

Try to inculcate the life skills which would help the child to deal with all the problems he faces during this turbulent period because an appropriate and sensible behavior from parents' end can help a child to great extent to come out as victorious through this tough phase.

Lecturer (Biology)
Govt. Model SanskritiSr Sec School
Bahdurgarh-3109 (Jhajjar)

Amazing Facts

1. **There are some ice creams that are 75% air.**
2. In the United States, the most frequent month for a tornado to occur is in May.
3. A mother hen turns her egg approximately 50 times in a day. This is so the yolk does not stick to the shell.
4. The reason why flamingos are pink is because they eat shrimp which have a red pigment.
5. Jellyfish have been on Earth for over 650 million years. This is before sharks and dinosaurs.
6. Shirley Temple was considered to play the role of Dorothy in "The Wizard of Oz."
7. One million cloud droplets are needed to make enough water to produce one raindrop.
8. In the world, the Netherlands has the highest concentration of museums in the world. Just in Amsterdam alone there are 42 museums.
9. Rice flour was used to strengthen some of the bricks that make up the Great Wall of China.
10. Research has indicated that a tie that is on too tight can increase the risk of glaucoma in men.
11. Charlie Chaplin once lost a contest for a Charlie Chaplin look alike.
12. Stalks of sugar cane can reach up to 30 feet.
13. The markings that are found on dice are called "pips."
14. Joseph Gayetty is credited for inventing toilet paper in 1857. Unfortunately, his invention failed and did not catch on until ten years later.
15. A newly hatched fish is called a "fry."
16. The music band UB40 got its name from an unemployment form in England
17. The Olympic Flame was introduced in 1928 in Amsterdam.
18. The YKK on the zipper of your Levis stands for Yoshida Kogyo Kabushibibaisha, the world's largest zipper manufacturer.
19. Armadillos can be housebroken.
20. The Eisenhower interstate system requires that one-mile in every five must be straight. These straight sections are usable as airstrips in times of war or other emergencies
21. The material to build the Taj Mahal was brought in from various parts of India by a fleet of 1000 elephants.
22. Medical research has found substances in mistletoe that can slow down tumor growth.
23. Bill Gates house was partially designed using a Macintosh computer.
24. The male howler monkey of Central and South America is the noisiest land animal, which can be heard clearly from a distance of ten miles away.
25. Nerve cells can travel as fast as 120 metres per second.
26. It is said that grapefruit got its name because it grows like grapes in clusters. One cluster can have up to 25 grapefruits.
27. Abdul Kassam Ismael, Grand Vizier of Persia in the tenth century, carried his library with him wherever he went. Four hundred camels carried the 117,000 volumes.
28. Maine is the toothpick capital of the world.
29. Peanut butter is an effective way to remove chewing gum from hair or clothes.
30. Polar bears are excellent swimmers. They have been known to swim more than 60 miles without a rest.

https://greatfacts.com/

1. What is a quarter of three-quarters? **Three sixteenths**
2. Technically the avocado ('fruit' of the avocado tree) is a : Berry; Tuba; Nut; or Fungus? **Berry**
3. From the Greek root word for a pointed pillar, what is the technical term for the division sign (÷) ? **Obelus**
4. Which occupation traditionally used 'walla' (in the US), 'rhubarb' (UK), and 'gaya' (Japan)? **Actor**
5. SS Ancon was the first ship to navigate what single-vowelled passage on 15 August 1914? **Panama Canal**
6. Crepuscular creatures are mainly active in: Sunlight; Moonlight; Twilight; or Darkness? **Twilight**
7. A low-cost 'ratoon' crop (for example of sugar-cane or rice) grows from/on: Windblown seeds; Stubble after cropping; Flooded land; or Astroturf ? **Stubble after cropping**
8. The two traditional symbols used to indicate treble and bass clefs in musical notation are respectively based on: G and F; P and L; T and B; S and E ? **G and F**
9. What high quality gravity/capillary-fed implement was traditionally ruby-tipped gold, and is nowadays usually iridium-tipped stainless-steel ? **Fountain pen**

10. The first almanacs, made in Babylon/Iraq c.750BC, originally listed: Important people; Recipes; Prayers; or Planetary movements ? **Planetary movements**
11. What common mineral's name (technically silica or SiO_2) derives from old Polish-German 'kwardy', meaning 'hard' ? **Quartz**
12. AgustaWestland, Bell, Oboronprom and Sikorsky are notable makers of: Solar panels; Helicopters; Telecomms systems; or Nuclear reactors ? **Helicopters**
13. The particle physics unit of reactionary particle decay is: Strangeness; Weirdness; Oddness; or Bafflement ? **Strangeness**
14. What product 'brand' from the Gamay is traditionally released the third Thursday of November each year ? **Beaujolais Nouveau**
15. The German Bauhaus institution famously combined building design with: Gardens; Artworks; Energy systems; or Water ? **Artworks**
16. Analepsis is more commonly known as a what in a play/story/film: Credits; Flashback; scenes; or Intermission ? **Flashback**
17. What invention of the Greenland Inuit is also derogatory slang for an outdoor hobbyist who observes or collects things ? **Anorak**
18. Baroque (a dramatic heavily detailed style of art form) began in: 500BC Athens; 1200s Paris; 1600s Rome; or 1800s Rio de Janeiro? **1600s Rome**
19. A thin middle section of a wooden chair-back, particularly old and carved, is called a: Spit; Splint; Sprout; or Splat? **Splat**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-305-general-knowledge/

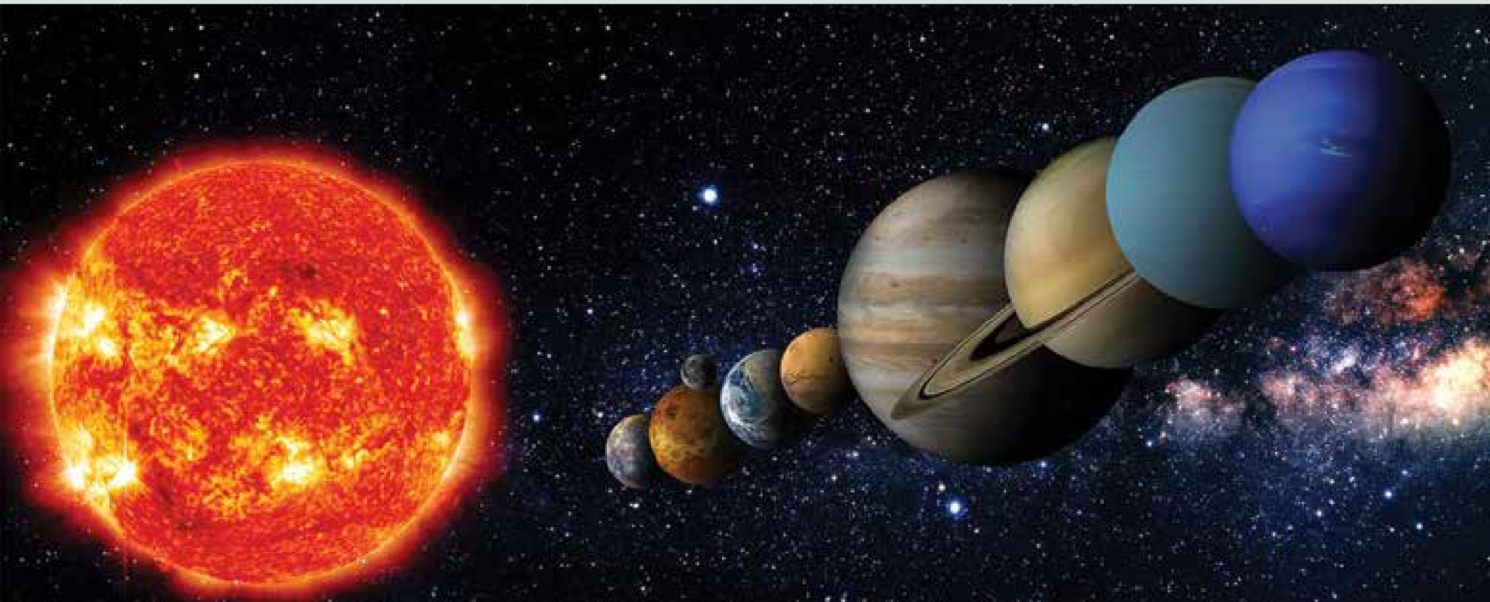

आदरणीय संपादक जी,

सादर नमस्कार।

जुलाई 2021 का अंक पढ़कर बहुत अच्छा लगा। इस अंक में पढ़ा कि आपदा में अवसर कैसे ढूँढ़ा जाता है। सही में हमारे शिक्षक साथियों ने बच्चों तक मुख्यमंत्री दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम, अवसर एप व विभिन्न माध्यमों से शिक्षण सामग्री पहुँचाई व मूल्यांकन हेतु आवश्यक साधन उपलब्ध करवाए। इस महामारी के दौरान बच्चों को योग व आनंदपूर्ण गतिविधियों को अपनी जीवन शैली में शामिल करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। पत्रिका का यह अंक संग्रहणीय है। बधाई।

अमित मलिक
प्रभारी
राजकीय प्राथमिक विद्यालय झिंवरहेरी -1
थानेसर, कुरुक्षेत्र, हरियाणा

आदरणीय संपादक महोदय,

सप्रेम नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' के गतांक को पढ़ने का अवसर मिला। पढ़कर मालूम हुआ कि विद्यालय शिक्षा विभाग के द्वारा कोरोना-काल की चुनौती का कितने सूझ-बूझ ढंग से मुकाबला किया है। जब सब कुछ बंद हो गया, ऐसे वक्त में 'मुख्यमंत्री दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम' संकटमोचक बना। सचमुच विभाग ने आपदा में अवसर को खोजा है। प्रमोद कुमार के लेख से जानकारी मिली कि इस बार गत वर्ष रही कमियों को दूर करके और व्यापक ढंग से इस कार्यक्रम को चलाने की योजना बनाई गई थी। डॉ.बलबीर सिंह भारी व गौरी शंकर साहू का लेख 'कोरोना के दौर में तनाव से बचाव के सूत्र' काफी रोचक जानकारियों से भरपूर था। उत्कृष्ट विद्यालयों की कड़ी में रामगढ़ आरोही स्कूल पर लिखा लेख अन्य विद्यालयों के लिए प्रेरणा है। कुल मिलाकर एक रोचक व ज्ञानवर्धक अंक के लिए टीम 'शिक्षा सारथी' को हार्दिक बधाई।

हरिन्द्र अत्री
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा हरियाणा, पंचकूला

सच अच्छाई खोजिए अपने भीतर आप

सच अच्छाई खोजिए, अपने भीतर आप।
ख़ुशबू अंदर फूल के, जिससे उसका जाप।। 1 ।।

औरों की सुनता चला, अपने भूल उसूल।
पहचानेगा कौन फिर, बन तेरे अनुकूल।। 2 ।।

बातें करते लोग लख, परेशान हो चोर।
वो समझे तेरी करें, चुगली सब चहुँ ओर।। 3 ।।

निर्बल कोई भी नहीं, ख़ुद से है अनजान।
लकड़ी भीतर आग है, जले तभी पहचान।। 4 ।।

नीयत अच्छी राखिए, होंगे सारे काम।
जैसी करनी आपकी, वैसा मिले मुकाम।। 5 ।।

छलिया का आभार कर, जाना उसका भेद।
फूँक-फूँक कर पाँव रख, रहे न ख़ुद पर खेद।। 6 ।।

देने वाला और है, पाने वाले आप।
पाकर देते और को, बढ़ता तभी प्रताप।। 7 ।।

राधेयश्याम 'प्रीतम'
प्रवक्ता हिंदी
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
किरावड़, भिवानी, हरियाणा

RNI NO: HARBIL/2012/52385

POSTAL REGD NO: HR/AB-102/20-22